|| ओ३म् ||

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रबल उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UPHIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2011-13
दयानन्दाब्द १८६,
शक सं. १९३४,
सृष्टि सं. - १९६०८५३११३

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन- एक विश्वग्राम के दर्शन
पृष्ठ- ८ पर

मानव मात्र के लिए ऋषिवर दयानन्द की आदर्श शिक्षाएं
पृष्ठ- १० पर

वर्ष-11 अंक-22 फाल्गुन कृ. ४ से फाल्गुन शु. ४ सं. २०६९ वि. 01 से 15 मार्च 2013 अमरोहा, उ.प्र. पृ. 14 प्रति-5/-

स्वामी आर्यवेश सम्बोधित करते हुए, मंचासीन गोविन्द सिंह भंडारी, स्वामी वेदानंद, स्वामी सौम्यानन्द, स्वामी दिव्यानन्द व डॉ. अनिल आर्य- राष्ट्रीयाध्यक्ष आदि -केसरी।

तुष्टिकरण राष्ट्र के लिए घातक

जातिवादी आरक्षण से सामाजिक समरसता को खतरा

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

सुमन कुमार वैदिक
नई दिल्ली

तुष्टिकरण राष्ट्र के लिए घातक है। वोट बैंक की नीति के कारण राजनीतिक दल अपने निहित स्वार्थों के चलते राष्ट्रीय कर्तव्यों एवं दायित्वों को भूलते जा रहे हैं। इससे राष्ट्र कमजोर होता है तथा जगह-जगह अलगाववाद के स्वर फूटने लगते हैं। यह विचार केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली के 34वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित 'अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन' में परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने अपने उद्बोधन में व्यक्त किये।

25 से 27 जनवरी तक रामलीला मैदान, अशोक विहार में चले तीन दिवसीय इस भव्य महासम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों से लगभग 5000 आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। सम्मेलन का शुभारम्भ 251 कुण्डीय विश्व शान्ति महायज्ञ के साथ हुआ जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रातःकाल पहुंचकर अपनी पवित्र आहुति समर्पित की। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अखिलेश्वर महाराज ने कहा कि वेदों के रास्ते पर चलकर ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है।

सम्मेलन का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के कोषाध्यक्ष मायाप्रकाश त्यागी ने ध्वजारोहण के साथ किया। उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के संयोजक स्वामी आर्यवेश ने कहा कि आज जातिवाद समाज के लिए नासूर बन चुका है, जब तक वेदों के अनुसार गुण, कर्म तथा स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था नहीं होगी तब तक समाज में एकता नहीं हो सकती। जातिवादी आरक्षण ने सामाजिक समरसता को छिन्न-भिन्न कर दिया है। इस अवसर पर वक्ताओं ने जोर देकर कहा कि आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को एक बार फिर देशभर में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को मजबूत करने के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। वक्ताओं ने यह भी कहा कि आर्यसमाज द्वारा सारे संसार का वास्तविक कल्याण हो सकता है। इसलिए आर्यसमाज एवं वेद मार्ग के अनुसरण करने की प्रबल आवश्यकता है।

समारोह में उत्तरी दिल्ली की महापौर श्रीमती मीरा अग्रवाल, दिल्ली नगर निगम के नेता सदन डॉ. महेन्द्र नागपाल, गोविन्द सिंह भंडारी, स्वामी वेदानंद, स्वामी सौम्यानन्द, स्वामी दिव्यानन्द, डॉ. विश्वपाल जयंत, दर्शन अग्निहोत्री, प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी, आ. प्रेमपाल शास्त्री, आ. गवेन्द्र शास्त्री, वेद्य इन्द्रदेव, पूर्व महापौर शकुंतला आर्या, स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती, कै. अशोक गुलाटी, राजेश गुप्ता, जीवनलाल आर्य, ओम प्रकाश नागिया, सुदेश अरोड़ा, डॉ. रमाकान्त गुप्ता आदि ने विचार व्यक्त किये। पूरा अशोक विहार का क्षेत्र ओम् के ध्वजों से सजा हुआ था। देश के कोने-कोने से पधारे हजारों आर्यों ने महासम्मेलन में हर्षोल्लास के साथ भाग लिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ट्रस्ट द्वारा

टंकारा में भव्य ऋषि बोधोत्सव

रामनाथ सहगल
टंकारा (राजकोट)

महर्षि दयानन्द सरस्वती की पावन जन्मभूमि टंकारा में शिवरात्रि के शुभ अवसर पर गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी ऋषि बोधोत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है। शनि, रवि व सोमवार, 09 से 11 मार्च तक आयोजित इस कार्यक्रम में देशभर से पधारे आर्य प्रतिनिधि भाग लेंगे। समारोह में आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

इस अवसर पर 04 से 10 मार्च तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ भी होगा जिसके ब्रह्मा आचार्य रामदेव होंगे तथा संगीताचार्य सत्यपाल पथिक व कुलदीप आर्य भक्ति संगीत प्रस्तुत करेंगे। सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता हीरो ग्रुप इण्डस्ट्रीज के प्रमुख बृजमोहन मुंजाल करेंगे तथा डीएवी कालेज प्रबंधकत्री समिति के प्रधान पूनम सूरी मुख्यातिथि होंगे।

इस अवसर पर स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, स्वामी रामानन्द, स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, डॉ. शिवदत्त व्याकरणाचार्य, कान्तिभाई अमरतिया, सुरेशचन्द्र अग्रवाल, कुंवरजी भाई बावलिया, मोहनभाई कुण्डारिया, गिरीश खोसला, वेद प्रकाश गर्ग, बल्लभभाई कथीरिया, मिठाई लाल सिंह एवं इनके अतिरिक्त देश-विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

टंकारा ट्रस्ट की ओर से मैनेजिंग ट्रस्टी व प्रधान सत्यानन्द मुंजाल, उपप्रधाना शिवराजवती आर्या तथा मंत्री रामनाथ सहगल ने श्रद्धालु व दानी महानुभावों से अपील की है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिए एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/क्रास चैक/ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर द्वारा 'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा' के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर, नई दिल्ली-01 पर अथवा आचार्य, श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा, राजकोट, गुजरात-363650 पर दें।

राजार्य सभा के संस्थापक स्वामी इन्द्रदेव 'यति' नहीं रहे

आचार्य राजदेव शास्त्री/रामदेव आर्य
जतीपुर, पीलीभीत (उत्तर प्रदेश)।

अखिल भारतीय राजार्य सभा के संस्थापक व अध्यक्ष तथा गुरुकुल शाही, जहानाबाद के अधिष्ठाता व संस्थापक एवं आर्यराष्ट्र (मासिक) के सम्पादक प्रखर राष्ट्रभक्त व वैदिक सिद्धांत मर्मज्ञ स्वामी इन्द्रदेव 'यति' का १४ फरवरी को ९५ वर्ष की आयु में अपने गांव जतीपुर (पीलीभीत) औरैया में आकस्मिक निधन हो गया। उन्होंने अपना शरीर सुबह पांच बजे त्यागा। उनके निधन के समाचार से सम्पूर्ण आर्यजगत में शोक की लहर दौड़ गयी। उनका अन्तिम संस्कार गुरुकुल शाही में पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ वैदिक विधि विधान से किया गया।

उल्लेखनीय है कि स्वामी जी को सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित आर्यसमाज के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। स्वामी जी ने अनेक पुस्तकों का लेखन किया, जिनमें अर्थशास्त्र, कल्पतरु, सृष्टि का इतिहास आदि उल्लेखनीय हैं। छह भाषाओं के ज्ञाता स्वामी जी के कुछ ग्रन्थ अप्रकाशित भी हैं।

आर्यसमाज ने कोई जब भी सिद्धान्त विरुद्ध कार्य किया है तो स्वामी जी ने इसका विरोध किया। उल्लेखनीय है कि उन्होंने स्वामी अग्निवेश व इन्द्रवेश को हरियाणा में विधानसभा चुनाव लड़ाया था। चुनाव के बाद दोनों विजयी होकर विधायक बने। स्वामी जी स्वतंत्रता सेनानी थे तथा सार्वदेशिक सभा के इतिहास में इनका दो अध्याय में वर्णन है। उन्होंने दक्षिण भारत में आर्यसमाज के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उनके निधन पर उनके पुत्र यशपाल आर्य, डॉ. राम कुमार आर्य, राजार्य सभा के प्रदेश अध्यक्ष, दिनेश चन्द्र शास्त्री, रामदेव आर्य, डॉ. गुरुकुलानन्द सरस्वती, दयाकृष्ण कांडपाल, कृष्ण गोपाल महरोत्रा आर्य व रामसिंह आदि सहित देशभर से अनेक आर्य विद्वानों व नेताओं ने गहन शोक व्यक्त किया है। हार्दिक श्रद्धांजलि।

कैदी भी दें शिक्षा पर ध्यानः अर्जुनदेव

रामप्रसाद यज्ञिक
कोटा (राजस्थान)

जेल प्रशासन द्वारा शिक्षा के पर्याप्त साधन उपलब्ध कराये जाते हैं। कैदी भाई अधिक से अधिक शिक्षित होने के लिए इसका लाभ उठायें। उक्त विचार कोटा की सेन्ट्रल जेल में जिला आर्यसमाज द्वारा आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढ़ा ने व्यक्त किये। उन्होंने आगे कहा कि कैदी भाईयों को सदैव सकारात्मक सोच रखनी चाहिए तथा ईश्वर स्तुति कर अपने अपराध बोध पर मनन कर भविष्य में पुनरावृत्ति न हो, इसका संकल्प लें। रिटायर्ड चीफ इंजीनियर रामप्रसाद यज्ञिक ने कहा कि कैदी भाई स्वरोजगार हेतु कुछ हुनर सीखकर यहां से निकलें ताकि यहां से छूटने के बाद अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकें। पंजाबी समिति कोटा के अध्यक्ष दर्शन पिपलानी ने

केन्द्रीय कारागार में कैदियों को सम्बोधित करते वक्ता- केसरी।

कैदी भाईयों से कहा कि आप यहां पर अपने भाईयों के साथ अच्छा व्यवहार करें। आपका सद्व्यवहार ही आपको यहां से जाने के बाद समाज की मुख्यधारा से जोड़ेगा। कार्यक्रम में जेल अधीक्षक शंकर सिंह ने अतिथियों का परिचय देते हुए स्वागत किया। सभागार में 500 से अधिक कैदी भाई शामिल थे। इस अवसर पर मुख्य रुप से कैलाश चन्द्र बाहेती, जेएस दुबे, अरविन्द पांडेय, हरिदत्त शर्मा, श्रीचन्द गुप्ता, बनवारीलाल सिंघल, रामदेव शर्मा, नरदेव आर्य, ओमप्रकाश तापड़िया, रामकृष्ण बल्दुआ, अजय कुमार सूद, चन्द्रमोहन कुशवाह, नरेश विजयवर्गीय, उमेश कुर्मी, रमेश आर्य, डा. किशोरी लाल दिवाकर, अमरलाल गहलौत, मोड़ूलाल सैनी, बंशीलाल रेनवाल, खेड़ारसूरलपुर, ओमप्रकाश शर्मा, चन्दालाल नागर आदि शामिल रहे।

भिलाई आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव संपन्न

रवि आर्य
भिलाईनगर (छत्तीसगढ़)

आर्यसमाज सेक्टर-6 का त्रिदिवसीय 53 वां वार्षिकोत्सव एवं अथर्ववेद महायज्ञ का कार्यक्रम 21 से 23 दिसंबर तक संपन्न हुआ। इसकी पूर्व संध्या पर एक भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम पुराना नेहरु नगर क्लब में भी आयोजित किया गया। भारत के ख्याति प्राप्त विद्वानों द्वारा इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई गई, इनमें गुरुकुल आमसेना, उड़ीसा के संस्थापक स्वामी धर्मानंद सरस्वती, बिजनौर के भजनोपदेशक पं. नरेश दत्त, पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की प्राचार्या डा. प्रीति विमर्शनी एवं छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव प्रमुख हैं। उद्घाटन 21 दिसंबर को झंडा फहराकर किया गया। प्रातः हवन, भजन और प्रवचन तथा सायं भजन प्रवचन उपरोक्त विद्वानों द्वारा दिए गए। प्रथम दिवस में दोपहर में अंतर शालेय भाषण एवं क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 12 टीमों ने भाग लिया। विजयी टीमों को पुरस्कृत किया गया। अंतिम दिन अथर्ववेद महायज्ञ की पूर्णाहूति दी गयी। इसमें लगभग 1200 लोगों ने भाग लिया। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रवि आर्य एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रधान जितेन्द्र प्रकाश मल्होत्रा द्वारा किया गया।

स्वामी दयानंद विदेह द्वारा वेद योग प्रचार

प्रतिनिधि
चास (बोकारो)।

ओम साधना मंडल के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी दयानंद विदेह की प्रेरणा से प्रतिवर्ष वेद यज्ञ योग का प्रचार बोकारो में 1986 से आर्य समाज बोकारो स्टील सिटी के कार्यक्रम के माध्यम से प्रभावित होकर नवल किशोर प्रसाद प्रतिवर्ष वैदिक यज्ञ सत्संग करा रहे हैं। जिसमें स्वामी जी वेद मंत्रों के माध्यम से जीवन जीने की कला सिखाते हैं। अंधविश्वास, पाखंड, जादू टोना, भूत प्रेत आदि रुढ़ीवादी परंपराओं से बचने का मार्गदर्शन करते हैं। हम सब स्वामी जी के अत्यंत ऋणी हैं। वे हमें संस्कृति की ओर ले जाने की तथा रक्षा करने का संकल्प दिलवाते हैं। वेदज्ञय की सरल व्याख्या हँसते-हँसते तनाव रहित जीवन बना रहे ऐसा व्यावहारिक सन्देश देते हैं।

आर्येशानंद ने पूरे किये चिकित्सा सेवा के पचास वर्ष

प्रतिनिधि
पिण्डवाडा।

डॉ. एम.एल. रवि आर्यप्रेमी उर्फ स्वामी आर्येशानंद सरस्वती के पिण्डवाडा में चिकित्सा सेवा के पचास वर्ष पूर्ण होने पर मनन आश्रम कांटल में स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाजसेवी तथा वरिष्ठ अधिवक्ता सुरेशचन्द सुराणा ने की।

मकर संक्रांति के पवित्र पर्व पर हुए इस समारोह में परम श्रद्धेय महन्त शंभुनाथ महाराज आम्बेश्वर मोहननाथ, महन्त तीर्थागिरी, शंकरदास, जोगपुरी जी, रमेशपुरी, निर्भयनाथ, रामदास, रमेशगिरी आदि संतों ने शिरकत की। कार्यक्रम में प्रातः दस बजे शिवगंज की आचार्या धारणा दीदी एवं गुरुकुल की कन्याओं द्वारा वैदिक यज्ञ किया गया। 11 बजे महन्त शंभूनाथ को 'आयशपीर' की पदवी एवं गादी मिलने के उपलक्ष में सम्मानित किया गया। उसके बाद सभी संतों को बारी-बारी से माल्यार्पण कर तथा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। समस्त संतों का आर्येशानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां भेंट की गईं। शिवगंज गुरुकुल की कन्याओं, वरली आदिवासी छात्रावास की कन्याओं, कांटल, गडिया और आसपास के गांवों से आये आदिवासियों को भी शॉलें भेंट की गयीं। स्कूली छात्रों को पारितोषिक वितरित किए गये। इसके अतिरिक्त रामदेव सत्संग मंडल के समस्त सदस्यों को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। आगन्तुक मेहमानों ने डा. एम.एल. रवि आर्य उर्फ स्वामी आर्येशानंद सरस्वती के पिण्डवाडा में चिकित्सा सेवा में पिछले 50 वर्षों से दी जा रही सेवा की भूरी-भूरी प्रशंसा की। बाहर से पधारे साधुसंतों के अतिरिक्त पिंडवाडा तथा आसपास के गणमान्य लोगों ने भारी मात्रा में अपनी उपस्थिति दी।

साप्ताहिक यज्ञ संपन्न

सुमन कुमार वैदिक
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)।

आर्यसमाज का साप्ताहिक यज्ञ 3 फरवरी को जगदीश प्रधान के निवास स्थान ग्राम घरबरा में देवमुनि द्वारा कराया गया। इस अवसर पर देवमुनि ने कहा कि ब्रह्मयज्ञ, देवपूजा, बलिवैश्वय यज्ञ, पित्रयज्ञ एवं अतिथि यज्ञ को ऋषि दयानंद ने महायज्ञ कहा। अन्य किसी यज्ञ को यह नहीं कहा गया। जो जगत में जन्म लेकर मनुष्य जैसा कर्म नहीं करते उनमें और पशुओं में कोई अन्तर नहीं। विजयपाल शास्त्री ने कहा कि आर्यों का संगठन आर्य समाज है। आर्यसमाजी क्रांतिकारी होता है। देश आजाद भी क्रांतिकारियों ने ही कराया। इस अवसर पर संस्कृत भारती के प्रचारक अजय ने कहा कि हमें संस्कृत के प्रति जागरुक रहना होगा। वेद, उपनिषद सभी वैदिक कालीन साहित्य संस्कृत में है। संस्कृत नहीं रहेगी तो संस्कृति भी नहीं रहेगी। उन्होंने जानकारी दी कि 10 दिन में संस्कृत बोलना सीखा जा सकता है। जिसे वह निशुल्क सिखाते हैं। बताया कि जून में गाजियाबाद में 10 दिन का शिविर आयोजित होगा। जानकारी के लिए दूरभाष 9718649129 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

सार्वदेशिक संचालन समिति के संयोजक स्वामी आर्यवेश जी ने कहा

महिलाओं पर अत्याचार करने वालों को मिले कड़ी सजा

विशेष प्रतिनिधि
नई दिल्ली।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिल्ली में हुई गैंगरेप और पाश्विक घटना के प्रति गहरा दुख और आक्रोश प्रकट करते हुए सरकार से मांग की है कि इस दुष्कृत्य को अंजाम देने वाले अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाये।

विज्ञप्ति जारी करते हुए प्रतिनिधि सभा के संयोजक स्वामी आर्यवेश ने कहा कि हैवानियत की हदों को पार कर जाने वाली नारी उत्पीड़न की घटनाओं से आज सारा देश त्रस्त है। प्रतिदिन कोई न कोई घटना ऐसी घट जाती है जो यह सोचने को विवश करती है कि आखिर महिलाओं के प्रति समाज का नजरिया इतना घिनौना क्यों होता जा रहा है? चौंकाने वाले आंकड़े बताते हैं कि केवल दिल्ली में ही हर हफ्ते तीन से चार अनाश्रित महिलाएं विभिन्न जगहों पर पाई जाती हैं, जिनकी हिफाजत का जिम्मा लेने वाला कोई नहीं है और इस तरह की महिलाएं जब-तब हादसों का शिकार होती रहती हैं। महिलाओं के प्रति उभर रही इस गंदी सोच को कैसे बदला जाये। उन्होंने धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से आह्वान किया है कि वे सब मिलकर महिलाओं के प्रति हो रहे अत्याचार और अमानुषिक घटनाओं के प्रति एकजुट होकर समाज में जन-जागरण अभियान चलायें। आर्य समाज पहले से ही महिलाओं की उन्नति तथा उनके प्रति हो रहे अत्याचार के प्रति संघर्षरत रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सब मिलकर महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान के लिए एकजुट होकर कार्य करें और महिलाओं के प्रति समाज में बन रही गलत सोच को बदलने के लिए समाज को संस्कारित करने पर विशेष बल दें। कहा कि भारतीय संस्कृति में महिलाओं को देवी की तरह माना जाता है। उनका सम्मान जरुरी है।

देहदान के लिए करें जागरूक

अमरोहा (कृष्णमोहन गोयल)। विश्व प्रसिद्ध हृदय रोग चिकित्सक डा. नरेश त्रेहन ने दूरदर्शन पर प्रसारित एक भेंट वार्ता में देश के समस्त समाजसेवियों से अपील की, कि वह मृत्यु उपरान्त देहदान के प्रति जागरुकता पैदा करें। श्री त्रेहन के अनुसार मृत्यु के दो-तीन घंटे तक प्रायः मृतक शरीर के नेत्र, गुर्दे, हृदय जैसे अंग अन्य जरुरतमंद मरीज को नई जिंदगी प्रदान कर सकते हैं। विश्व में सामाजिक परिभाषा की जरुरत है। डॉ. त्रेहन के अनुसार हमारे देश में नेत्र दान से ही हजारों नेत्रहीन व्यक्तियों को नई रोशनी मिल जाती है। इसी प्रकार गुर्दों से लोगों को नया जीवन दिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि केवल जागरुकता ही हजारों व्यक्तियों को नया जीवन प्रदान कर सकती है।

अर्जुन देव चढ्डा, कैलाश बाहेती, राकेश चढ्डा व अन्य आर्यगणों के साथ मध्य में हैं पूनम सूरी- केसरी

सेवा से अहंकार दूर होता है: पूनम सूरी

अर्जुन देव चड्ढा
तलवण्डी (राजस्थान)।

डीएवी स्थापना के 127वें वर्ष के उपलक्ष्य में संस्था की ओर से 'निर्बलों को सम्बल' देने का उपक्रम किया गया। इस अवसर पर डीएवी प्रबंध समिति नई दिल्ली के प्रधान पूनम सूरी के द्वारा गरीबों और जेरुरतमंदों को कम्बल और सिलाई मशीनों का वितरण किया गया।

इस अवसर पर श्री सूरी ने कहा कि आर्य समाज का छठा नियम 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है' के संदर्भ में हमें सैदेव लोगों की सेवा के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए। कहा की सेवा करने के लिए सैदैव धन की आवश्यकता नहीं होती। उन्होंने निर्धनों और गरीबों की सेवा को सबसे बड़ा उपकार बताया और कहा कि पीड़ित, शोषित लोगों की अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहायता व सहयोग करना चाहिए। वे भी भगवान की बनाई हुई साकार मूर्तियां हैं।

इस अवसर पर मणि सूरी, जुनेश काकडिया, अंजू उतरेजा ने महिलाओं को सिलाई मशीनें, शॉलें और पुरुषों को कम्बल वितरित किए। इस अवसर पर सतपाल आर्य, अशोक गर्ग, अर्जुनदेव चड्ढा, कैलाश बाहेती, राकेश चड्ढा, श्योराज वशिष्ठ आदि उपस्थित रहे।

महिला सुरक्षा हेतु आगे आए दुर्गा वाहिनी व बजरंग दल

विनोद बंसल
दिल्ली।

13 फरवरी को विश्व हिन्दू परिषद् दिल्ली की युवा शाखा दुर्गा वाहिनी व बजरंग दल ने वेलेंटाइन डे की आड़ में चल रहे बाजार बाद, नशा व लव जिहाद से सावधान करते हुए राजधानी के युवा वर्ग से अपील की है कि वे नारी का सम्मान व नैतिक मूल्यों की रक्षार्थ आगे आएं तथा पीड़ितों की मदद के लिए हाथ बढ़ाएं। इस अवसर पर दुर्गा वाहिनी दिल्ली की संयोजिका संजना चौधरी ने युवतियों से अपील की है कि दिल्ली में बढ़ती महिला अत्याचार की घटनाओं पर अंकुश *लगाने हेतु आवश्यक है की बहिनें* वेलेंटाइन के नाम पर किसी भी प्रकार के बाजारू छलावे में न आएं अन्यथा वे लव जिहाद जैसी विभिषिका की शिकार भी हो सकती हैं। बजरंग दल के प्रांत संयोजक शिव कुमार ने कहा कि हमें विश्वास है कि हमारा युवा वर्ग सार्वजनिक स्थानों पर किसी भी प्रकार की अश्लीलता व अभद्रता नहीं होने देगा और पुलिस व प्रशासन किसी भी प्रकार के अनैतिक व अवैधानिक कार्यों को रोकने में देश के सभ्य समाज की मदद करेगा। विहिप दिल्ली के झंडेवालान स्थित मुख्यालय में बुलाई गई एक बैठक के बाद संगठन के मीडिया प्रमुख विनोद बंसल ने बताया कि प्यार में नग्नता, वासना, अभद्रता व अश्लीलता इत्यादि का कोई स्थान नहीं है, सांस्कृतिक मार्यादाओं में रहकर प्यार करना ही प्यार का असली स्वरूप है। वेलेंटाइन डे की आड़ में होने वाली उत्पीड़न की घटनाओं पर अंकुश लगाने तथा नारी सम्मान की रक्षार्थ हमने एक **हेल्प लाइन सेवा को प्रारम्भ किया है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति (विशेषकर महिलाएं) फोन 011. 23616372 पर काल कर इस सम्बन्ध में सहायता प्राप्त कर सकते हैं।** इससे पूर्व पूर्ण कुम्भ में मारे गए भक्तों की आत्म शान्ति हेतु प्रार्थना व घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हेतु एक मिनट का मौन भी रखा गया। साथ ही इस प्रकार की दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने हेतु प्रभावी कदम उठाने की मांग भी की गई। बंसल ने आगे बताया कि हमने दिल्ली के पुलिस आयुक्त, होटलों, पबों, रेस्तरां इत्यादि को पत्र लिखकर निवेदन किया है कि वे इस दिन राजधानी में कहीं भी मादक पदार्थों का प्रयोग तथा अश्लीलता का सार्वजनिक प्रदर्शन न होने दें। साथ ही असामाजिक तत्वों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही करें।

केआयुप की बैठक सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की अंतरंग सभा की बैठक महर्षि दयानन्द भवन, आसफ अली रोड में डॉ. अनिल आर्य की अध्यक्षता में सोल्लास सम्पन्न हुई। बैठक का संचालन महामन्त्री महेन्द्र भाई ने किया। -डी. के. भगत

मनाया श्रद्धानंद बलिदान दिवस

अमित कुमार आर्य
सहारनपुर (उ.प्र.)

वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास संस्था ने स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस पर बेसहारा लोगों को सर्द हवाओं से बचाने के लिए कम्बल वितरित किये। नगर के आर्यसमाज खेड़ा अफगान में बलिदान दिवस पर सर्वप्रथम यज्ञ किया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान जिनेश्वर प्रसाद ने कहा कि स्वामी जी का जीवन मनुष्य के आत्मिक बल के द्वारा शीर्ष तक पहुंचने की अनुपम गाथा है, उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर वैदिक संस्कृति के मूल्यों की रक्षा के लिए साहसिक कार्य किया। स्वामी दयानंद जी के दर्शन मात्र से परिवर्तित होकर निर्भीक सन्यासी बन गये, जो कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष तक पहुंचे। वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास के संस्थापक अध्यक्ष आदित्य प्रकाश गुप्त ने कहा कि गरीबों की सेवा से बढ़कर कोई पुण्य नही है। स्वामी श्रद्धानंद को याद करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में बलिदान और त्याग एवं दृढ संकल्प द्वारा ही कांगड़ी के घने जंगलों में जहां शेर जैसे जंगली जानवरों का घूमना हो, वहां गुरुकुल की स्थापना की। न्यास के सचिव वेदभूषण गुप्त ने कहा कि जो व्यक्ति बुराईयों को त्यागकर सदगुणों को स्वीकार कर अपना ले वही सच्चा आर्य है। इस अवसर पर डा. अशोक गुप्ता, प्रेम प्रकाश गर्ग, विजय लक्ष्मी, रवि, राजेश आर्य, ओमपाल प्रधान आदि सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

प्रान्तीय शिविर २५ से

पटना। आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी जरैल के विशाल प्रांगण में 25 फरवरी से 3 मार्च तक आर्य वीर दल बिहार राज्य का प्रान्तीय शिविर लग रहा है। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान स्वामी देवव्रत सरस्वती एवं वरिष्ठ शिक्षक हरि सिंह आर्य उपस्थित रहेंगे।

महर्षि दयानंद के आदर्शों पर चलने का आह्वान

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते डीएवी प्रधान पूनम सूरी- केसरी।

रामप्रसाद याज्ञिक
कोटा (राजस्थान)।

महर्षि दयानंद युग पुरुष थे। उनके विचारों द्वारा किये गए समाज सेवा के कार्यों एवं कुरूतियों को दूर करने के कार्यों का प्रचार जन-जन तक होना चाहिए। उक्त विचार डीएवी संस्था के 127 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में यज्ञ महोत्सव के अवसर पर आर्य शिरोमणि पूनम सूरी ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि एक पंडाल में महर्षि दयानंद का सम्पूर्ण का सम्पूर्ण जीवन दर्शन एवं वैदिक साहित्य उपलब्ध कराना अच्छा है। हमें उनके आदर्शों पर चलना चाहिए। श्री सूरी ने महर्षि दयानंद वेद प्रचार समिति द्वारा आयोजित जीवन दर्शनी प्रदर्शनी का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर दयानंद वेद प्रचार समिति के प्रधान अरविन्द पांडेय ने बताया कि कोटा में आयोजित राष्ट्रीय मेला दशहरा में गत 15 वर्षों से प्रदर्शनी आयोजित हो रही है। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढ़ा ने कहा कि प्रदर्शनी में बेटी बचाओ, नेत्रदान, रक्तदान, जल बचाओ, पर्यावरण एवं नशबन्दी के आकर्षक पोस्टर लगाकर सामाजिक चेतना का कार्य किया जा रहा है। प्रारम्भ में जिला सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढ़ा, मंत्री कैलाश बाहेती, कोषाध्यक्ष जेएस दुबे, अरविन्द पांडेय, प्रभुसिंह कुशवाहा, दिनेश शर्मा ने पुष्पहार से स्वागत किया। इस अवसर पर डीएवी पब्लिक स्कूल की प्राचार्या अंजू उतरेजा, रामप्रसाद यज्ञिक, चन्द्रमोहन कुशवाहा, गुमानसिंह आर्य, अग्निमित्र श्योराज वशिष्ठ आदि आर्यजन शामिल रहे।

पारिवारिकी खुशहाली हेतु यज्ञ कराया

ठाकुर सतीश आर्य
नेगी गढ़ी।

आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता नवनीत आर्य द्वारा पारिवारिक खुशहाली हेतु यज्ञ का आयोजन कराया गया। यज्ञ के ब्रह्मा भोला सिंह व यज्ञमान नवनीत आर्य रहे। ब्रह्मा भोला सिंह ने आचमन की विवेचना, गीता उपदेश, कर्मफल विधान, मां की विवेचना, गीता उपदेश, कर्मफल विधान, मां की ममता का गुणगान, भौतिक वाद पर अंकुश पर प्रकाश डाला व कहा कि आत्मा की खुराक वैदिक सत्संग है और वेद ही हमें जीवन की कला सिखाते हैं। इस अवसर पर मौखी सिंह आर्य, सहकोषाध्यक्ष, कुसुमलता सुन्दर सिंह, चिम्मनलाल चावला, कोषाध्यक्ष सहित स्त्री, पुरूष व बच्चें उपस्थित रहे।

बरनावा में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ १७ से

सुमन कुमार वैदिक
बरनावा (बड़ौत) उ.प्र.

पूर्वजन्म के श्रंगीऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी द्वारा स्थापित महर्षि महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, (लाक्षाग्रह) बरनावा में इस वर्ष 17 से 24 मार्च तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ एवं गुरुकुल का वार्षिकोत्सव मनाया जाएगा। यहां प्रतिवर्ष कई बार पारायण यज्ञ तथा होली से पूर्व चतुर्वेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन गांधीधाम समिति बरनावा द्वारा किया जाता है।

सामान्य अवस्था में सामान्य से प्रतीत होने वाले ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचनों के माध्यम से ज्ञान की जो अद्‌भुत अमृतधारा प्रवाहित हुई, उसने मानव इतिहास के कई गूढ़ रहस्यों का दिग्दर्शन कराने के साथ बहुत सी ऐसी घटनाएं और रहस्य, जो हमारे ग्रन्थों में संक्षिप्त या प्रक्षिप्त रूप में मिलती हैं, सभी रहस्यों की विस्तार और वैज्ञानिकता के आधार पर व्याख्या की। प्रचार और चकाचौंध से दूर एक सामान्य से प्रतीत होने वाले पूज्यपाद ब्रह्मचारी जी का सारा जीवन क्रियात्मक यज्ञों के प्रचार-प्रसार में लगा रहा। अपने छोटे से जीवनकाल में लगभग पांच हजार वेद पारायण यज्ञ और सैंकड़ों चतुर्वेद पारायण यज्ञ कराये। ग्राम-ग्राम, नगर-नगर घूमकर इस महामानव ने महर्षि दयानन्द द्वारा

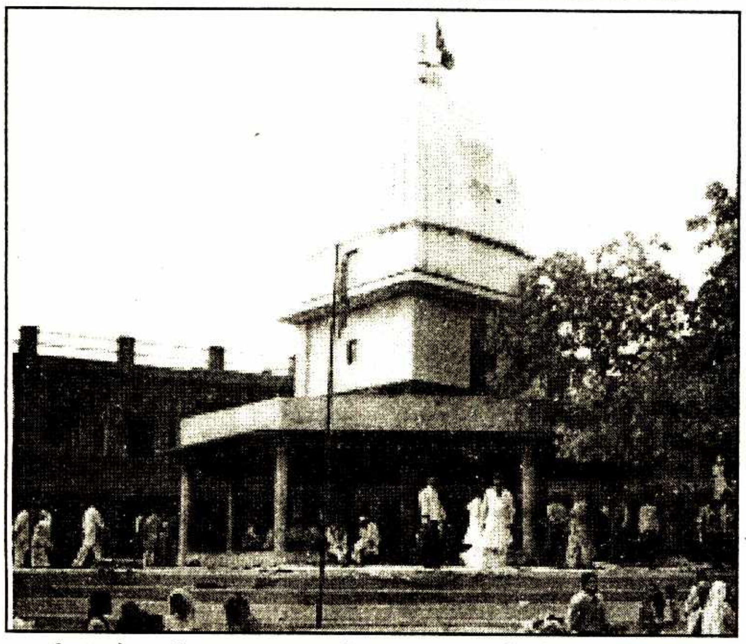

पुनर्जागृत वेद एवं यज्ञ प्रचार की ज्योति को हजारों परिवारों में दैदीप्यमान कर दिया। उनकी प्रेरणा से अनगिनत श्रद्धालु दैनिक यज्ञ की सुगन्ध में रमण करने लगे। दुर्भाग्य की बात है कि इस गुदड़ी के लाल को जिसने इस महादेश की विलुप्त संस्कृति को अपने पूर्वजन्म की स्मृति के आधार पर विशेष योगमुद्रा में चमत्कारिक रूप से समाज के मध्य रखा, किंतु देश ने उनको महत्व नहीं दिया। सनातनी को इसलिए नहीं स्वीकार करते थे, क्योंकि वह वेद और यज्ञ की बात करते थे, तथा पाखण्ड, अंधविश्वास का खण्डन करते थे। आर्य विद्वानों ने उनको बिना जाने, बिना सुने, बिना पढ़े उन्हें शंका की दृष्टि से देश खारिज कर दिया, जबकि इनके योगमुद्रा में जाने की प्रक्रिया और दिये गये प्रवचनों पर गम्भीर अनुसंधान की आवश्यकता थी। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त ने अपनी कर्मभूमि बरनावा (बागपत) में हिण्डन और काली नदी के संगम पर श्री महानन्द संस्कृत विद्यालय एवं गोशाला की स्थापना की, जो महाभारत काल का ऐतिहासिक लाक्षागृह कहलाता है, जहां कौरवों ने पण्डवों को जलाकर मारने का षड्‌यंत्र रच लाखा मण्डप बनाया था। आज भी महाभारतकालीन भवन और गुफाएं यहां हैं। वर्तमान में यहां छः विशाल यज्ञवेदी तथा गोशाला स्थापित है। यहां के आचार्य सारे देश में यज्ञ-प्रचार की ज्योति को प्रभावी रूप से दैदीप्यमान कर रहे हैं।

महिलाएं असुरक्षित क्यों?

कृष्ण मोहन गोयल

सम्पूर्ण देश में महिलाओं पर अत्याचार, बलात्कार की घटनाएं दिन-प्रतिदिन बढ़ रही हैं, जो आर्यजगत के लिए शर्मनाक हैं। समस्त परिवार छिन्न-भिन्न हो रहे हैं। वृद्धजनों को [illegible] सामान्य प्रक्रिया हो गयी है। [illegible] विचारधारा ने समाज के सारे बन्धन, सभ्यता, संस्कृति, आचार-विचारों को तिलांजलि दे दी है। दो दशक पूर्व देश के अधिकांश परिवारों में आर्य-संस्कृति सर्वोच्च मान्यता प्राप्त थी, विवाह संबन्धों में भी आर्य पद्धति के अनुयायी परिवारों को प्राथमिकता मिलती थी, परन्तु आज यह लुप्त हो रही है।

सरकार भी मदिरा और मांस व्यापार को प्रोत्साहित कर रही है। प्रत्येक शहर में मांस और मदिरा का व्यापार प्रगति पर है। क्या यह सभ्य समाज का द्योतक है? महिला पर अत्याचार प्रत्येक समाज के लिए घातक है। राष्ट्रीय स्तर पर इन गम्भीर बिन्दुओं पर गहन चिन्तन जरूरी है। प्रत्येक राष्ट्र की अस्मिता से महिलाओं [illegible] नहीं किया जा सकता।

यज्ञ सम्पन्न, दामिनी को श्रद्धांजलि

के.एम. रामलानी
जयपुर।

सीनियर सिटिजंस ने अग्रवाल फार्म स्थित डे-केयर सैन्टर पर आयोजित यज्ञ में ससंकल्प आहुतियाँ दीं। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक प्रवक्ता यशपाल 'यश' ने आह्वान किया की देश में बढ़ रही महिलाओं के साथ दुराचार अत्याचार जैसी वीभत्स घटनाओं का मुकाबला आध्यात्मिक ढंग से करने हेतु आर्थभाव से प्रार्थना करें। फोरम के सचिव के. एम. रामलानी ने बताया कि यज्ञ में दामिनी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

दिल्ली में विशाल धरना व प्रदर्शन सम्पन्न

सुरेश आर्य
नई दिल्ली।

नारी उत्पीड़न, शोषण, अश्लील विज्ञापन, बढ़ते बलात्कार के विरूद्ध रोष व्यक्त करने के लिए आर्य समाज एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से 7 जनवरी को प्रातः 10: 00 से 1:30 बजे तक जन्तर मन्तर रोड़, नई दिल्ली में विशाल धरना तथा प्रदर्शन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने की तथा यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य प्रेमपाल शास्त्री रहे। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, डॉ. जयेन्द्र आचार्य, प्रेम सब्बरवाल, गायत्री मीना, रचना आहुजा, माया प्रकाश त्यागी, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, आदर्श सहगल, धूमसिंह शास्त्री, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, शशिप्रभा आर्या, प्रभा सेठी, वीरेन्द्र योगाचार्य, बहन पूनम व प्रवेश, चौ. नाहरसिंह कादियाण आदि लोग नारी अत्याचार के विरूद्ध अपना रोष प्रकट करने के लिए साथियों सहित भारी संख्या में पहुंचे।

तुरन्त आवश्यकता है

'आर्यावर्त केसरी' समाचार-पत्र के लिए कार्यालय अधीक्षक व उपसंपादकों की। सेवानिवृत्त एवं अंशकालिक भी सम्पर्क करें- डॉ0 अशोक कुमार आर्य, सम्पादक। फोन : 05922-262033 / 09412139333

गृहप्रवेश पर यज्ञ

सतीश आर्य
अफजलगढ़ (बिजनौर)

आर्यसमाज के प्रधान चौ0 चरणसिंह आर्य के नवनिर्मित भवन में प्रवेश के शुभ अवसर पर यज्ञ सम्पन्न किया गया, जिसके पुरोहित डॉ0 अशोक रस्तोगी तथा यज्ञमान प्रधान जी स्वयं व उनकी धर्मपत्नी जयवीरो देवी रहीं। इस अवसर पर डॉ0 रस्तोगी ने यज्ञ में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कृत्य है। यज्ञ से समूचे संसार के साथ-साथ मानव का स्वयं का हित भी होता है। जिन घरों में नित्य प्रति श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया जाता है, वहां सुख, शांति व समृद्ध विराजती है, घर के लोग नीरोग रहते हैं, उनकी मनोकामना पूर्ण होती है। यज्ञ में सुरेशपाल सिंह आर्य, सौरभ तोमर, ज्ञानसिंह तोमर, महीपाल सिंह, सुशील रस्तोगी, यतीश आर्य, अरुण विश्नोई, मनोज कुमार आदि ने योगदान दिया।

महाकुम्भ में वैदिक प्रचार की धूम

सुमन कुमार 'वैदिक'
प्रयाग।

तीर्थराज प्रयाग, जो साहित्य, धर्म, संस्कृति का केन्द्र भी है, में महाकुम्भ के अवसर पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में वैदिक धर्म प्रचार हेतु शिविर का आयोजन 13 जनवरी से 25 फरवरी तक मेला परिसर में सेक्टर-9, ब्लाक--66, मुक्ति मार्ग पर किया गया, जिसमें चतुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य हरिश्चन्द हिमाचल के ब्रह्मत्व में भव्य विशाल यज्ञशाला पर सम्पन्न हुआ। शिविर में निशुल्क आवास एवं भोजन की व्यवस्था की गयी।

ताइक्वांडो में भी गुरुकुल आगे

सुमन कुमार वैदिक
कासगंज (उ.प्र.)

उ.प्र. ओपन इन्टर स्कूल ताइक्वांडो चैम्पियनशिप 2012 के जुनियर एवं सीनियर बालिका वर्ग की प्रतियोगिता का आयोजन एन. आर.पब्लिक स्कूल द्वारा 3 एवं 4 दिसम्बर को आयोजित की गयी। कन्या गुरुकुल विद्यापीठ नजीबाबाद की छात्रा अपाला व मानसी ने जूनियर एवं सीनियर वर्ग में स्वर्ण पदक तथा माधवी व रचना, ने जूनियर एवं कीर्ति तथा राधा ने सीनियर वर्ग में रजत पदक प्राप्त किया।

इस प्रतियोगिता में सैन्टर रैफरी गुरुकुल की छात्रा प्रभा शास्त्री को श्रेष्ठ कोच का पुरस्कार दिया गया। इससे पूर्व भी गुरुकुल की छात्रायें राष्ट्रीय और प्रदेश स्तर पर प्रतियोगिताएं जीत चुकी हैं। पुरस्कार प्रदेश ताइक्वांडो अध्यक्ष बी.एल. कुशवाह द्वारा दिये गये।

भजनोपदेश हेतु सम्पर्क करें

वेद प्रचार, बोध सप्ताहों तथा उत्सवों पर भजन मण्डली सहित प्रचार हेतु सम्पर्क करें।

पं. सतीश 'सुमन' व पं. सुभाष 'राही'

आर्यकुटी, मकान नं0 288, रामपुरी, रुड़की रोड, मुजफ्फरनगर-251001

मोबाईल नं0 - 09897302352, 09760895671

लागत से भी आधे मूल्य पर केवल प्रचारार्थ बिक्री हेतु उपलब्ध है

अर्चना यज्ञ ज्योति

(पंच महायज्ञ सहित)

रंगीन आकर्षक आवरण
उत्तम क्वालिटी पेपर/
पृष्ठ-48/मूल्य- रु. 7/-
. (600 रुपये सैंकड़ा)
आज ही अपना आदेश भेंजे-

डॉ. अशोक कुमार आर्य
मंत्री, आर्य उपप्रतिनिधि सभा
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट,
अमरोहा-244221 (उ.प्र.) दूर.- 05922-262033,
चल.- 09412139333 / 08273236003
-हरिश्चन्द्र आर्य, अधिष्ठाता (05922-263412)

हिन्दुओं को आतंकवादी कहने पर विहिप का प्रचंड प्रदर्शन

केन्द्रीय गृहमंत्री को बर्खास्त करने हेतु राष्ट्रपति को दिया ज्ञापन

विनोद बंसल
दिल्ली।

केन्द्रीय गृहमंत्री द्वारा हिन्दुओं को आतंकवाद कहे जाने के विरुद्ध विश्व हिन्दू परिषद व बजरंग दल ने दिल्ली के जंतर-मंतर पर जमकर प्रदर्शन किया तथा सुशील कुमार शिंदे का पुतला फूंका। प्रदर्शनकारियों ने बाद में भारत के राष्ट्रपति से श्री शिंदे की शिकायत करते हुए उन्हें तुरंत मंत्रिमंडल से निष्कासित करने की मांग सम्बन्धी ज्ञापन भी दिया। विहिप दिल्ली के महामंत्री सत्येन्द्र मोहन ने इस अवसर पर कहा कि गृहमंत्री जैसे संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति द्वारा हिन्दुओं को आतंकी बताया जाना व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को आतंकी ट्रेनर बताया जाना न सिर्फ हिन्दू समाज के लिए अक्षम्य बात है बल्कि देश के दुश्मनों, खास कर आतंकवादियों के हौसले बढ़ाने वाला है। उन्होंने चेताया कि कांग्रेसी नेता व देश के गृहमन्त्री आतंकियों की भाषा बोलने से बाज आएं, अन्यथा वे समझ लें कि हिन्दू समाज को जब सत्ता देना आता है तो सत्ताच्युत करना भी आता है।

विहिप दिल्ली के उपाध्यक्ष ब्रज मोहन सेठी ने इस अवसर पर कहा कि अच्छा होता कि गृहमंत्री महोदय ऐसा बयान देकर देश को गुमराह व विश्व भर के हिन्दुओं की भावनाओं को आहत करने से पूर्व हिन्दू समाज के मूल को पढ़ते और महात्मा गांधी की तरह संघ के प्रशिक्षण शिविरों में जाकर देखते कि वहां कैसे राष्ट्रभक्तों को तैयार किया जा रहा है। 1934 में महात्मा गांधी महाराष्ट्र के वर्धा में लगे संघ के शिविर में गए थे, जिसकी उन्होंने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी तथा संघ के स्वयंसेवकों की राष्ट्रभक्ति को देखकर स्वयं नेहरू जी ने 1963 के गणतंत्र दिवस समारोह की परेड में संघ के स्वयं सेवकों को शामिल किया था। संघ की शाखाएं पूरे विश्व भर में सुबह-शाम खुले पार्कों में लगती हैं, जहां पर जाना किसी भी राष्ट्रभक्त के लिए प्रतिबंधित नहीं है। काश हमारे दिग्भ्रमित गृहमन्त्री व कांग्रेस के जहर उगलने वाले हिन्दूद्रोही नेता वहां आकर राष्ट्रभक्ति का पाठ पढ़े होते तो, वे आतंकियों के हिमायती नहीं होते। बजरंग दल के प्रांत संयोजक शिव कुमार के नेतृत्व में आए दल के कार्यकर्ताओं ने हाथों में भगवा ध्वज, बैनर व प्ले कार्ड लिए हुए थे। विहिप-बजरंग दल के कार्यकर्ता "हिन्दुओं का यह अपमान, नहीं सहेगा हिन्दुस्तान", 'गृह मंत्री शर्म करो', 'कांग्रेसियों होश में आओ', 'भगवा पर हमें नाज है, हिन्दुओं का सरताज है' जैसे नारे नगाते बेहद रोष में दिखे, तथा केन्द्रीय गृहमंत्री का पुतला दहन भी किया गया।

विहिप दिल्ली के मीडिया प्रमुख विनोद बंसल ने बताया कि प्रदर्शन के बाद राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी को एक ज्ञापन भी दिया गया जिसमें विहिप ने मांग की कि गृहमंत्री के इस बयान से देश का हिन्दू ही नहीं, बल्कि संत समाज भी बेहद आहत है। अतः अपने संवैधानिक दायित्व के पालन नहीं करने पर गृहमंत्री को तुरंत निलंबित किया जाए। साथ ही प्रधानमंत्री को अपने कैबिनेट के वरिष्ठ मंत्री के इस कृत्य के लिए माफी मांगने के लिए भी कहा जाए। बंसल ने आगे बताया की हमने तय किया है कि यदि इस सम्बन्ध में सरकार शीघ्र नहीं चेती तो विहिप कार्यकर्ता प्रयाग में लगे कुंभ में शिंदे की शिकायत करेंगे व कुम्भ में कांग्रेसियों के हिन्दू विरोधी चहरे को उजागर करेंगे। प्रदर्शनकारियों में विहिप दिल्ली के मंत्री रामपाल सिंह, बजरंग दल के नीरज दानोरिया, श्याम कुमार, अशोक कपूर, हिन्दू हेल्प लाइन के शैलेन्द्र जायसवाल सहित अनेक हिन्दू संगठनों के पदाधिकारी शामिल थे।

सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता

मधुबनी (बिहार)

सूर्यकला लीला कान्त स्मृति न्यास के तहत मई 2013 में मिथिला वासियों विशेषकर मधुवनी जिला के निवासियों के लिए सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। जो प्रतिभागी प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करेंगे, उन्हें क्रमश 50000/-, 30000/- एवं 20000/- रुपयें का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

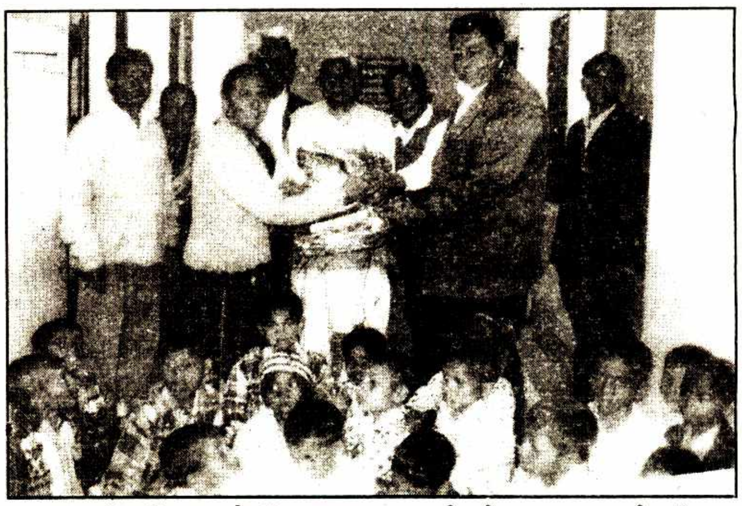

वस्त्र वितरित करते जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा -केसरी।

निराश्रित बच्चों को वस्त्र वितरित

रामप्रसाद याज्ञिक
कोटा।

निराश्रित बच्चे भी भगवान की बनाई सजीव मूर्तियां है। नर-सेवा नारायण-सेवा के रूप में मानकर इनकी सेवा सहायता करने से आत्मिक सुख मिलता है। उक्त विचार आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने वीर सावरकर नगर स्थित निराश्रित बालगृह में आर्य समाज जिला सभा द्वारा सभी बच्चों के लिए वस्त्र व बिस्कुट के पैकेट वितरित करते हुए व्यक्त किये। आर्य समाज जिला सभा के श्रीचन्द गुप्ता, जे.एस.दुबे, राम प्रसाद याज्ञिक, राजीव आर्य आदि उपस्थित थे।

संस्था की मैनेजर अनिता ढाकने ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त कर धन्यवाद दिया।

धूमधाम से मना ५१वां वार्षिकोत्सव

सतीश निझावन
लखनऊ (उ.प्र.)।

देश के महान ऋषि-महर्षि विद्वान् आचार्यों में स्वामी दयानंद जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी, गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम जी, स्वामी दर्शनानन्द जी आदि महानपुरुषों एवं वैदिक चिन्तकों ने अपने क्रांतिकारी तथा प्रेरणाप्रद विचारों से माता-पिता तथा समाज के मस्तिष्क को बदलकर एक विशेष वैदिक आर्योचित समाज का निर्माण करने का प्रयास किया था, उसी प्रकार नैतिक, चारित्रिक मूल्यों को क्षेत्रीय जन-जन में प्रतिष्ठित करने के लिए संकल्पित आर्य समाज के 51वें वार्षिकोत्सव समारोह का आयोजन किया गया।

वार्षिकोत्सव पर उपस्थित प्रमुख आर्यजन- केसरी।

आदर्शनगर आलमबाग में आयोजित समारोह में दिनांक 24, 25, 26 एवं 27 जनवरी 2013 के अवसर पर आमंत्रित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित वैदिक विद्वान आचार्य भगवानदेव वेदालंकार ने मानव जीवन के परम लक्ष्य, ब्रह्म मुहुर्त की उपयोगिता, जीवन की सफलता के सूत्र, राष्ट्रीय पर्व मनाने की आवश्यकता, गृहस्थ जीवन को आनन्दमय एवं सुखी बनाने की युक्तियां तथा ईश्वर की उपासना करने की विधियां जैसे गहन और आवश्यक विषयों पर वैदिक मंत्रों के द्वारा समाज-सुधार सम्बन्धी कल्याणकारी विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित आर्योपदेशिका सुदेश आर्या ने अपने सुमधुर संगीत के माध्यम से गृहस्थ-सुधार, ईश्वर-विश्वास, राष्ट्र-भक्ति, स्वामी दयानन्द के उपकार तथा समाज-सुधार जैसी ज्वलन्त समस्याओं पर सुमधुर भजनों को प्रस्तुत कर वातावरण को आनन्दमय बनाया। वातावरण को सुगन्धित एवं खुशहाल बनाने के लिए आर्य समाज के उत्साही एवं समर्पित मन्त्री- सतीश निझावन के संयोजन में एवं आचार्य सन्तोष वेदालंकार, सरस्वती आर्या के कुशल ब्रह्मत्व में सामवेद परायण यज्ञ प्रातः सायं पवित्र मन्त्रोच्चारण के साथ सम्पन्न किया गया, जिसमें शान्ति, सद्भावना तथा लोगों के कल्याण की कामना की गई। वाषिकोत्सव के समापन के अवसर पर अन्य गणमान्य विद्वान आचार्य अखिलेश, आर्य मित्र के संपादक वेदवत आर्य, उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा. रुपचन्द दीपक, मन्त्री रेवती रमन रस्तोगी, कोषाध्यक्ष रुद्र स्वरुप ने अपने उच्चादर्शों, परोपकारी सेवा भावना से आर्य समाज संस्था को उँचाईयों के शिखर पर ले जाने के जन उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किये। उत्सव को बल प्रदान करने एवं सफल बनाने में वीरेन्द्र निझावन, हरीश निझावन, अमरीश अग्रवाल, राजेन्द्र नाथ हूजा, आत्मप्रकाश वत्रा, डॉक्टर राय, किरण, श्रृंगला, चित्र जौहरी, उर्मिला निझावन आदि ने यज्ञ में यजमान पद को सुशोभित कर कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष योगदान दिया।

मनाया स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

फरीदाबाद (अनिल आर्य)। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर हरियाणा के लोकायुक्त पीतम सिंह, डॉ. समयपाल सिंह, कमिश्नर, मुम्बई पुलिस, डॉ. वेद प्रताप वैदिक, डॉ. अनिल आर्य, अध्यक्ष, के. आयु प., दिल्ली, महेन्द्र भाई, रामकुमार सिंह, दिल्ली, आचार्य बलदेव तथा आचार्य विजयपाल आदि उपस्थित थे। संचालन केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सत्य भूषण आर्य ने किया व आभार विमला ग्रोवर, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, फरीदाबाद ने व्यक्त किया।

प्रवेश सूचना (सत्र : 2013-14)

छठी कक्षा (आयु 9 से 11वर्ष) एवं सातवी कक्षा (आयु 10 से 12 वर्ष) में कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण-पत्र (मूल्य केवल 100/- रुपये) भरकर 31.03.2013 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा कराएं। (पंजीकरण-पत्र डाक विभाग द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।) कन्याओं की लिखित प्रवेश परीक्षा 07 अप्रैल 2013 दिन रविवार को प्रातः 8.00 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

सत्यानंद मुंजाल - कुलपति

आर्य कन्या गुरुकुल
(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)
शास्त्री नगर, लुधियाना-141002 दूरभाष-0161-2459563

॥ 'ओ३म्' कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

आर्यरत्न डॉ० ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

♦ न्यास द्वारा ONLINE TEST प्रारम्भ। ♦वर्ष में तीन बार दिया जावेगा 5100/- रु० का उपरोक्त पुरस्कार। ♦ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं। ♦विश्व भर के लोगों से इस ONLINE TEST में भाग लेने का अनुरोध। **आप जीत सकते हैं 5100/-**

आपको क्या करना होगा- • न्यास की **Websit-www.satyarthprakashnyas.org** पर **Log on** करें। • **ONLINE TEST** को **click** करें • साधारण-सा जानकारी पत्र On line भरें। • 50 प्रश्नों का सैट हिन्दी व अंग्रेजी में उपलब्ध है। • भाषा-विकल्प चुनें। • बहु विकल्पीय प्रश्न-पत्र को हल करें। • आप अपने प्राप्तांक तत्समय ही जान सकेंगे। •पुरस्कार चार माह में एक बार दिया जावेगा। अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले एक से अधिक प्रतिभागी होने की दशा में निर्णय लॉटरी द्वारा होगा। प्रतिभागी के लिए आयु सीमा व अन्य कोई बन्धन नहीं है। • अधिकतम अंक प्राप्त करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश एवं न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ पढ़ें, जो कि हमारी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

-डॉ० अमृतलाल तापड़िया, परीक्षा समन्वयक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

कार्यालय : नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज०)- ३१३००१

टेली फैक्स : २४१७६९४, मोबा० : ९३१४२३५१०१ (कार्य. अध्यक्ष), ९८२९०६३११० (व्यवस्थापक)

ई मेल : satyarthnyas 1@gmail.com, वेबसाइट : www.satyarthprakash.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती

की 189वीं जयन्ती

7 मार्च पर विशेष

इन्द्रदेव गुलाटी

स्वराज्य

"कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।"- **महर्षि दयानन्द सरस्वती**

आर्य समाज के संस्थापक और सत्यार्थ प्रकाश के लेखक महर्षि दयानन्द का कहना व लिखना सिद्धान्त रूप से तो अति उत्तम-प्रशंसनीय-सराहनीय है, किन्तु व्यावहारिक जीवन इसके अनुकूल नहीं है। अब दयानन्द जी! आर्यावर्त की दशा को जानिए, जो इस प्रकार है-

आपकी आयु 59 वर्ष 8 माह 6 दिन रही। आपने सत्यार्थ प्रकाश में राजार्य सभा बनाने हेतु लिखा था किन्तु आर्यों ने स्वतन्त्रता संघर्ष में काम करने के लिए राजार्य सभा नहीं बनाई, बल्कि अधिकां । आर्य कांग्रेस में चले गए। 1920 से कांग्रेस मुस्लिम तुष्टीकरण के कार्य करती रही, जिसमें आर्य भी सहयोग देते रहे। 1947 में देश का क्षेत्रफल 13 लाख 25 हजार वर्गमील था। 14 अगस्त को देश विभाजित हुआ। खंडित भारत का क्षेत्रफल 10 लाख वर्गमील रहा। आर्य समाज का गढ़ लाहौर, जहां आपने स्वयं देश की दूसरी आर्य समाज स्थापित की थी, वह भारत में नहीं रहा। लाखों लोग मरे। करोड़ों शरणार्थी बने। अरबों रुपयों की सम्पति नष्ट हुई किन्तु अदूरदर्शी- स्वार्थी-कमजोर नेताओं के कारण 65 वर्षों के बाद स्वतंत्र भारत में हमारी वही दशा है, जो 1947 तक परतन्त्र भारत में थी। देश में भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेईमानी, अपहरण, चोरी, डकैती, गोहत्या, पशुहत्या, मिलावट, नकली माल, बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, यौन उत्पीड़न, दहेज हत्या, अन्धविश्वास, पाखण्ड, मूर्ति पूजा शराब व मांस का सेवन, तस्करी, तम्बाकू का सेवन, अन्य अपराध कई गुना ज्यादा हो रहे हैं। देश में शराब की नदियां बह रही हैं। एक प्रकार से रावण राज्य आ गया है। देश का कानून कमजोर है। सजा हल्की तथा बहुत देर से मिलती है। नाबालिग लड़कियों से बलात्कार हो रहे हैं। महिलाएं असुरक्षित महसूस करती हैं, उनका बाहर निकलना दूभर हो रहा है। बहुत घटिया शर्मनाक दशा देश की हो गई है।

आप आर्यों को प्रेरणा दें कि वे राजार्य सभा के नाम से राजनीतिक कार्य करें, ताकि आपके स्वप्नों का आर्यावर्त वास्तव में बने।

—18 / 186, टीचर्स कालोनी, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
मोबा. : 08958778443

॥ओ३म् प्रतिष्ठ- 'ईश्वर' एक निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सृष्टिकर्ता आनंदमयी शक्ति है।

आर्य की पहचान :- ओम् का ध्यान, वेद का ज्ञान, यज्ञ का अनुष्ठान, गोभक्त संस्कारी सन्तान व राष्ट्रहित बलिदान

मात्र 100/- में 6 वीडियो सी.डी. से क्रान्तिकारी वैदिक प्रवचन

सम्पादक :- आचार्य आर्यनरेश वैदिकगवेषक, पीएच.डी. गाईड

संस्थापक :- उद्गीय साधना स्थली हिमाचल-173101, मो- 08010063725, 09418021091, 09871264213

फेसबुक सम्पर्क हेतु टाईप- "आचार्य आर्यनरेश"

महर्षि दयानन्द

डी.वी.डी.- ईश सत्ता विज्ञान, यज्ञ विज्ञान, वेद विज्ञान, मनो विज्ञान, नारी शक्ति, शरीर स्वस्थता विज्ञान, भाग्यवाद, राष्ट्र रक्षा हेतु आतंकवाद निवारण विज्ञान आदि।

सम्मेलनों की सफलता आन्दोलनों से

ऋषि ऋण ऐसे चुकाएं- गो रक्षा, समान कानून संहिता, नग्नता निवारक, विवाह आयु 16-25, कालाधन वापिस लाने का विधेयक पारित करवाएं व डी.डी. वेद चैनल चलवाएं अन्यथा सरकार से पृथक हो जाएं।

आचार्य आर्यनरेश

विद्यालयों के पाठ्यक्रम में संस्कृत पाठ व बिना अंग्रेजी उच्च शिक्षा-

आर्य बाहर से आए, वेदों का गलत भाष्य, जाति तथा मजहब के नाम पर आरक्षण, अण्डा मास मछली व झूठा इतिहास हटवाएं। विश्व मानव धर्म वेद को (सैकुलर) भारत धर्म बनवाएं, गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करवायें व युवाओं का चरित्र हरण करने वाले- समलैंगिकता, लिविंग रिलेशनशिप, गृहस्थ में रखेल का अधिकार बूचड़खाने, जिहादी आतंकवाद, छुआ-छूत, भाग्यवाद, पशुबलि प्रेरणा को पुस्तकों व चैनलों से समाप्त करवायें एवं महर्षि दयानंद को सच्ची श्रद्धांजलि हेतु रुपया डॉलर के बराबर व वैदिक राष्ट्रगान चलवाएं

विशेष :- 60 वर्ष से ऊपर वाले आर्यजन वानप्रस्थ लेकर 'दयानन्द सेना' बनायें, इण्डिया विदेशियत को हटाएं एवं देश को स्वदेशी भारत आर्यावर्त बनाएं।

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च पर विशेष

● महिलाओं को विधान मंडलों और संसद में 33% आरक्षण नहीं दिया जाए, क्योंकि ऐसा करना संविधान की मूल भावना के विरुद्ध है।

● महिलाएं देश व प्रदेशों में सर्वोच्च पदों पर भी अपनी योग्यता व प्रतिभा से बनती रही हैं।

● आरक्षण देने से अयोग्यों को भी चुन लिया जाता है, जो देश के लिए हानिकारक है, क्योंकि चीन व पाकिस्तान की विस्तारवादी नीति देश की सीमा को छोटा कर सकती है।

● दहेज हत्या विरोधी कानून को और कड़ा किया जाए।

● बलात्कार- सामूहिक बलात्कार-यौन उत्पीड़न लड़कियों को जबर्दस्ती उठाकर ले जाना- कुकर्म करने के बाद धमकी देना। हत्या कर देना- प्रेम प्रसंग में हत्याएं जैसी शर्मनाक घटनाओं की अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। अत: जघन्य अपराधों के लिए फांसी की सजा का प्रावधान किया जाए।

● नाबालिग लड़कियों से कुकर्म करना, छोटी बच्चियों को अपनी हवस की शिकार बनाना, स्कूल जाने वाली छात्राओं को तंग करना, सार्वजनिक स्थानों पर सोने के आभूषण छीन लेना जैसी घटनाएं स्वराज्य में शर्मनाक हैं। अत: पुलिस की संख्या कई गुना की जाए और सजा सख्त की जाए।

● धर्म परायण भारत को धर्मनिरपेक्ष देश घोषित करने का दुष्परिणाम है कि जहां कन्याओं -देवियों की पूजा होती है वहां के युवक उनके साथ व्यभिचार कर रहे हैं।

-डॉ. गिरीश चन्द्र गुप्त, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक (हरियाणा)

प्रवेश सूचना : सत्र 2013

रजिस्ट्रेशन 1 मार्च से

प्रवेश परीक्षा 10 अप्रैल 25 अप्रैल एवं 10 मई

गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक ने अत्यल्प काल में जो कीर्ति अर्जित की है, उससे गुरुकुल की शिक्षा एवं व्यवस्था का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। गुरुकुल के सुविशाल भव्य भवन दूर से ही दृष्टिगोचर होते हैं। विद्यालय भवन, छात्रावास, सभागार, भोजनालय तथा व्यायामशाला, यज्ञशाला आदि के पृथक-पृथक् रमणीय आधुनिक सुविधापूर्ण सुविशाल भवन यथाक्रम सुशोभित हैं। गुरुकुल के हरे पार्क, पार्कों की प्रवेशवीथिकाएं, तथा उनके उपद्वारों पर छायी लताओं के पुष्पगुच्छ पथिकों के मस्तक को चूमते-से प्रतीत होते हैं।

गुरुकुल में आपको प्रचीन तथा अर्वाचीन शिक्षा का अनुपम सामंजस्य देखने को मिलेगा। संस्था ने शिक्षा के साथ-साथ छात्रों के स्वास्थ्य और चरित्र-निर्माण में विशेष ख्याति अर्जित की है। अतएव प्रतिवर्ष प्रवेशार्थियों का दबाव बढ़ता जा रहा है। गत वर्ष आपकी संस्था को स्थानाभाव के कारण ५६८ प्रवेशार्थियों को लौटाना पड़ा। प्रवेश तथा व्यवस्था संबन्धी जानकारी निम्न है-

विशेषताएं :-

1. प्रविष्ट छात्रों का छात्रावास में रहना अनिवार्य।	5. इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स।
2. 10+2 तक C.B.S.E. दिल्ली से मान्यता।	6. आधुनिक स्मार्ट क्लास की व्यवस्था।
3. प्रवेश हॉस्टल में रिक्त स्थानों पर निर्भर।	7. कम्प्यूटर व सभी विज्ञान प्रयोगशालाएं।
4. संध्या-हवन, योग-प्राणायाम, नैतिक शिक्षा, और नियमित दिनचर्या	8. 10+1, +2 में आर्ट एण्ड साइंस साइड।
	9. हिन्दी व अंग्रेजी मीडियम।

सम्पर्क सूत्र : 08607776897, 01262-217550

सृष्टि के प्रारम्भ में ही ऋषियों ने किया ब्रह्मयज्ञ का विधान

आचार्य अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुआ सामवेद पारायण यज्ञ

सुमन कुमार वैदिक
मुजफ्फरनगर।

सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य दृश्य -केसरी।

12 से 14 फरवरी तक सामवेद पारायण यज्ञ ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के शिष्य हरलाल ने अपने ग्राम मण्डी में स्वामी रणवीर (कुटवी निवासी) के संरक्षण में आयोजित किया। तीस वर्ष से अन्न का त्याग कर चुके स्वामी जी का तपस्वी जीवन है। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा विद्वान तथा योगाचार्य अरविन्द शास्त्री (बरनावा) ने कहा कि सृष्टि के प्रारम्भ से, जब मानव कर्मबद्ध होकर संसार में आया, तभी ऋषियों ने उसके जीवन की रूपरेखा का निर्माण किया। उन्होंने कहा कि हमारे शरीर में जो द्वार हैं, उसका समन्वय प्रकृति से रहता है, प्रकृति में भी सात प्रकार की धारा है। वैदिक आचार्यों ने पांच प्रकार के यज्ञों को करना बताया।

प्रथम ब्रह्मयज्ञ का अभिप्राय है कि हम परमात्मा के ब्रह्ममयी विचारों में, उसकी उपासना में रत हो जाएं। ब्रह्म के समीप जाने का प्रयास करें व व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश करें। संसार का वैभव व्यष्टि में ले जाने वाला है। ब्रह्मयाज्ञी को अज्ञान नहीं रहता। वेद के मंत्रों के द्वारा उपासना करता हुआ उपासक ब्रह्मयाग में परिणित हो जाता है। ब्रह्मयागी का गृह स्वर्गमय हो जाता है। उसका द्रव्य पवित्र हो जाता है। इस अवसर पर स्वामी सत्यवेश भी रहे। पूर्णाहूति के पश्चात् ब्रह्मभोज आयोजित किया गया।

देवताओं का पूजन करना हमारा कर्तव्य : वैदिक

राजेन्द्र आर्य
ग्रेटर नोएडा।

अथर्ववेद पारायण यज्ञ का भव्य दृश्य -केसरी।

ग्राम मुर्शदपुर, ग्रेटर नोएडा में अथर्ववेद पारायण यज्ञ का आयोजन 8 से 14 फरवरी तक जग्गू प्रधान के निवास पर किया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा विक्रम शास्त्री (बरनावा) ने अथर्ववेद के मंत्रों की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि मानव प्रातःकाल की बेला में ब्रह्मयज्ञ उसके पश्चात् देवयज्ञ करना चाहिए। वेद-ध्वनि से ब्रह्म से गुथे विचार वायुमण्डल में प्रवेश हो जाते हैं, जिससे बने कवच के अन्तर्गत आने वाले दुष्ट के हृदय की प्रवृत्तियों में भी शुद्धता आ जाती है। जिन गृहों में वेद का उच्चारण होता है, उन गृहों के बालकों में सोते-जागते हुए श्वासों के माध्यम से उन परमाणुओं की प्रतिभा उनके हृदय में प्रवेश कर जाती है। मानव को सदैव अपनी वाणी में पवित्र रहना चाहिए।

इस अवसर पर आर्यसमाज के विद्वान सुमन कुमार वैदिक ने कहा कि देवताओं का पूजन करना हमारा कर्तव्य है। हमारे ऋषियों ने देवपूजा के लिए बहुत से विचार दिये। उन्होंने कहा कि यज्ञ पूर्ण विधि-विधान से करें। द्यौलोक केवल यज्ञ से ही सजातीय बनता है। वेद पठन-पाठन से वेद की रक्षा होती है। कहा कि पुरोहित वह होता है, जो यह चाहता है कि यज्ञमान की उर्ध्वगति हो। इसके लिए नित्य यज्ञ आवश्यक है। वैदिक यज्ञ कर्मकाण्ड का स्रोत चतुर्वेद संहिता ही है। शतपथ में दर्श, पौर्णमास, सोम याग, वाजपेय, राजसूय, अश्वमेध आदि का वर्णन है। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि भारत के धार्मिक जगत में वेदशास्त्राधारित धर्म के स्थान पर तथाकथित भगवानों अथवा गुरुओं को सर्वोपरि समझने लगे हैं। नये-नये गॉडमैन अवतरित हो गये हैं। जो शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्रकार के लोगों में प्रचार पा रहे हैं, क्योंकि वैदिक धर्म का प्रचार क्षीण हो गया है। इस अवसर पर सौरव शास्त्री एवं वैद्य विक्रम देव द्वारा सुन्दर वेदपाठ तथा भजन प्रस्तुत किये गये।

सेब एक औषधीय फल

कृष्ण मोहन गोयल

सेब एक औषधीय फल है। इसका विभिन्न प्रकार से सेवन करना अत्यन्त उपयोगी है।

खांसी- पके हुए सेब के जूस में मिश्री मिलाकर खाली पेट सेवन करें। निश्चित आराम होगा।

पथरी- सेब का रस पीने से गुर्दे की पथरी का रोग समाप्त हो जाता है।

बहुमूत्रता- सेब खाने से बहुमूत्रता की शिकायत दूर होती है।

मस्से- खट्टे सेब का रस मस्सों पर लगाने से मस्से धीरे-धीरे गिर जाते हैं।

दस्त- खाना खाने के उपरान्त बगैर छिलके का सेब दो बार खाने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

पेट में गैस- सेब के रस को गर्म कर पीने से पेट की गैस को आराम मिलता है।

कब्ज- खाली पेट छिलके सहित सेब खाने से कब्ज की शिकायत दूर होती है।

पीलिया- पीलिया रोग में सेब खाने से लाभ होता है।

वमन- कच्चे सेब के रस में नमक मिलाकर पीने से वमन में आराम मिलता है।

मसूड़े- मसूड़ों के दर्द में सेब खाने से बहुत लाभ होता है।

-कोट बाजार, अमरोहा

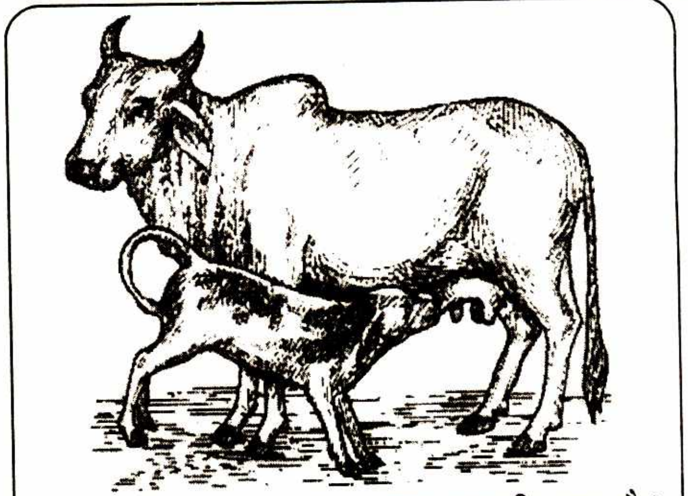
(गावो विश्वस्य मातरः - गाय सबकी माता है)

गौरक्षा पर आर्यावर्त केसरी की पहल

अमरोहा में नन्दार्य गोशाला की स्थापना

सुमन कुमार वैदिक
अमरोहा।

गाय के एक तोला घी के हवन से एक टन ऑक्सीजन गैस उत्पन्न होती है तथा वायुमण्डल में आणविक किरणों का प्रभाव क्षीण होता है। ऐसा रूसी वैज्ञानिक शिरोविच ने कहा। वैदिक ग्रन्थों में गोघृत का विधान है, किंतु हम न तो गाय पाल रहे हैं, न गोघृत से यज्ञ कर रहे हैं। भगवान कृष्ण और दयानन्द के अनुयायी कहलाने वाले गाय की फोटो की पूजा करते हैं, गोमाता की जय बोलते हैं। इससे गो की रक्षा नहीं होती। यदि हम गोपालन में असमर्थ हैं, तो हम उनकी सहायता तो कर सकते हैं तथा गऊशाला से जुड़कर अपना सहयोग दे सकते हैं।

आज गोवंश पर भारी संकट है। हमारे देश में एक करोड़ गोवंश प्रतिवर्ष काटा जाता है, और इतना ही बंग्लादेश भेज दिया जाता है। लोकमान्य तिलक ने कहा था कि चाहे मुझे मार डालो, पर गाय पर हाथ मत उठाओ। भगवान कृष्ण ने गाय को गीता में विभूति कहा है। महर्षि दयानन्द ने गोकरूणानिधि में कहा है कि एक गाय अपने जीवनकाल में 1980 व्यक्तियों को एक बार तृप्त करती है। उसी पीढ़ी द्वारा 410440 मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। हमारे प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि संसार में हिन्दू कहलाकर जीवित रहना चाहते हो, तो प्राणप्रण से गोरक्षा करो।

आर्यावर्त केसरी परिवार ने गोरक्षा हेतु श्रीमती हेमापन्त की पुण्यस्मृति में नन्दार्य गऊशाला की स्थापना गोकुल विहार, अमरोहा में की है, जिससे जुड़कर हम गोरक्षा यज्ञ में अपना पावन सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

आज हम महानगरीय जीवन में जी रहे हैं, जहां कुत्ते, सूअर तो पाले जा रहे हैं पर गाय नहीं। यदि हम स्वयं गऊ पालने में असमर्थ हैं, तो उनकी सहायता तो कर ही सकते हैं, जो कहीं भी गऊशाला चला रहे हैं।

गोपालन, संवर्द्धन व संरक्षण हेतु दान

सर्वश्री भूदेव प्रसाद चतुर्वेदी, एन.एन. गुगलानी एवं सुमन कुमार 'वैदिक' का हार्दिक धन्यवाद

ग्राम बिचकोली बटेश्वर, आगरा में दिनांक 12 फरवरी, 1943 को जन्मे श्री भूदेव प्रसाद चतुर्वेदी जी वर्तमान में कोलकाता में व्यापार करते हुए सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वाह कर रहे हैं। आपकी इच्छा है कि अपने पैतृक ग्राम में एक गोशाला खोलें। गोभक्त श्री चतुर्वेदी ने नन्द आर्य गोशाला हेतु रुपये 1100/- (एक हजार एक सौ रुपये) का सात्विक दान दिया है। इसी क्रम में ग्रेटर नोएडा निवासी श्री एन.एन. गुगलानी जी ने भी रुपये 100/- (एक सौ रुपये) मासिक के दान का संकल्प करते हुए अपना सात्विक सहयोग प्रदान किया है। इसी प्रकार श्री सुमन कुमार जी वैदिक भी गोपालन व संवर्द्धन हेतु प्रतिमाह इस गोशाला को रुपये 200/- (दो सौ रुपये) का पावन सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

इस निमित्त आर्यावर्त केसरी एवं गोशाला परिवार इन सभी गोभक्त सहयोगियों का हार्दिक आभार व्यक्त करता है तथा परमपिता परमात्मा से इनके यश, वैभव व दीर्घायुष्य की कामना करता है।

-डॉ. अशोक कुमार आर्य

गोरक्षा के निमित्त सात्विक दान देने वाले महानुभावों के नाम व पते चित्र सहित आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे।

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन- एक विश्वग्राम के दर्शन

अग्निमित्र शास्त्री

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आर्यों का महाकुंभ दिनांक 25 अक्टूबर से 28 अक्टूबर 2012 तक भारत की राजधानी नई दिल्ली में आयोजित किया गया। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के यशस्वी प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढा के नेतृत्व में गये कोटा बूंदी, बारां तथा झालावाड़ के आर्यसमाजों के दल के साथ मुझे भी इस सम्मेलन में भाग लेने का सौभाग्य मिला। हमारा दल जैसे ही सम्मेलन स्थल पहुंचा, वहां के सुंदरतम दृश्य को देखकर मन आनंदातिरेक से प्रफुल्लित हो गया। सम्पूर्ण सम्मेलन स्थल को आकर्षक ढंग से सजाया गया था। सम्मेलन का स्थान सम्मेलन स्थल न होकर एक विश्वग्राम सा नजर आ रहा था, और इस विश्वग्राम का अत्यन्त सुन्दर नामकरण किया गया था 'महर्षि दयानन्द नगर'।

महासम्मेलन में नेपाल, बर्मा, फीजी, भूटान, पाकिस्तान, मॉरीशस, मालदीव, कीनिया, दुबई, अरमीनिया, तुर्कमेनिस्तान, बांग्लादेश, इन्डोनेशिया, अमेरिका, ब्रिटेन, हॉलैण्ड, फ्रांस, चेकगणराज्य, गुआना, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका तथा रशिया आदि देशों से, व भारत के समस्त प्रान्तों से आये आर्यजनों ने इस सम्मेलन को वैश्विक स्वरुप प्रदान कर दिया। इस अवसर पर ऋगवेद का मन्त्रांश स्मरण हो आया ''यत्र विश्वभवत्येकनीडम्'' अर्थात परमेश्वर ऐसी कृपा करो कि सम्पूर्ण संसार एक आश्रय स्थल बन जाये।

महासम्मेलन के ध्वज स्थल पर एक साथ लहराते हुए बत्तीस देशों के राष्ट्रीय ध्वजों को देखा, तो अचानक ऐसा प्रतीत होने लगा कि यह आर्य महासम्मेलन न होकर मानो संयुक्त राष्ट्र संघ का अधिवेशन हो रहा हो। संसार के इन बत्तीस राष्ट्रीय ध्वजों के बीच उत्तुंग ध्वज दण्ड पर लहराता हुआ ओ3म् ध्वज ''कृण्वन्तोविश्वमार्यम्'' के ऋषि के सपनो को साकार करने की प्रेरणा प्रदान कर रहा था।

यद्यपि सम्मेलन के सभी सत्र महत्वपूर्ण थे, किन्तु 26 अक्टूबर 2012 को आयोजित विश्व आर्य सम्मेलन में जब विभिन्न देशों से आये आर्य प्रतिनिधियों ने क्रमशः अपने-अपने देश के आर्य समाज द्वारा किये जा रहे कार्यों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा विश्व के अन्य देशों के राष्ट्रीय उत्थान में आर्य समाज के योगदान का उल्लेख किया, साथ ही उनके द्वारा विश्व की युवा शक्ति को ऋषि के सन्देश तथा आर्य समाज के सरोकारों से परिचित कराने का संकल्प लिया गया, तो स्मृति पटल पर अनायास ही बौद्धकाल में होने वाली बौद्ध संगीती का दृश्य जीवित हो उठा। महासम्मेलन के दौरान हॉल नम्बर 4 में प्रतिदिन तमिल, असमी, मलयालम, गुजराती, बंगाली, मराठी, कन्नड़, उड़िया तथा भोजपुरी भाषा में उस भाषा को बोलने वाले राज्यों के प्रबुद्ध आर्योजनों द्वारा आर्यसमाज द्वारा किये जा रहे कार्यों का प्रस्तुतिकरण अन्तःकरण को छू देने वाला रहा तथा ऐसा लगा कि जैसे संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधिवेशन में विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधियों द्वारा अपनी अपनी भाषा में किसी महत्वपूर्ण बिन्दु पर चर्चा चल रही हो। इस दृश्य को देखकर महर्षि दयानंद सरस्वती का यह उद्गार स्मरण हो आया कि '' ऐ संसार के लोगों! यदि उन्नति चाहते हो तो आर्यसमाज के साथ चलो।'' सम्मेलन की आयोजक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधिसभा की उच्चस्तरीय व्यवस्थाओं ने आगन्तुकों का हृदय जीत लिया। मंच व्यवस्था, आवास व्यवस्था, भोजन व्यवस्था एवं जल सुविधा की व्यवस्था सभी उत्तम थीं। बैंक, एटीएम, लॉकर, साईबर कैफे, बैट्रीचलित वाहन, विदेशी मुद्रा विनिमय केन्द्र जैसी आधुनिक सुविधाएं इस दयानन्द नगर रुपी विश्वग्राम की शोभा में चार चांद लगा रही थीं। इसके लिए इस महासम्मेलन के परिकल्पनाकार विनय आर्य तथा ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य कोटिशः धन्यवाद के पात्र हैं। आर्यसमाज का सदा से ही विज्ञान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रहा है। महासम्मेलन मे आर्यसमाज के सन्देश को और अधिक विश्वव्यापी बनाने के लिए तथा अधिक से अधि

शेष पृष्ठ १० पर...

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

आर्यावर्त केसरी-वैवाहिक प्रपत्र

आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 उ.प्र.

आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में प्रकाशनार्थ विवरण इस प्रपत्र पर हिन्दी में स्वच्छ एवं स्पष्ट शब्दों में भरकर भेजें।

ये विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित होंगे तथा इनका प्रयोग आर्यावर्त केसरी वैवाहिक ब्यूरो द्वारा विवाह योग्य युवक/युवतियों के सम्बन्ध में जानकारी देने के लिये भी किया जाता है।

१. युवक/युवती का नाम........................
२. पिता का नाम..............................
३. पता......................................
....
४. आयु........ ५. लम्बाई....................
६. रंग-रूप....................................
७. शिक्षा.....................................
८. अन्य योग्यता/अभिरुचि.......................
९. व्यवसाय/नौकरी विवरण.......................
....
१०. आय (स्पष्ट लिखें)..........................
११. जन्मपत्री की आवश्यकता हाँ/नहीं...............
१२. किस प्रकार का जीवन साथी चाहते हैं...............
....
१३. पारिवारिक विवरण...........................
१४. अन्य......................................

नोट : यदि वैवाहिक विज्ञापन में पता न देकर केवल मोबाइल/दूरभाष नम्बर ही देना हो तो अवगत कराएं। अन्य किसी विवरण के लिए पृथक पृष्ठ पर सूचनाएं अंकित कर दें।

दिनांक....   अभिभावक के हस्ताक्षर

दूरभाष :..

वैवाहिक कॉलम

रिश्ते ही रिश्ते

वर चाहिए

◆मेरी पुत्री प्रीति तिवारी, आयु 32 वर्ष, एम.ए. संगीत, राजनीति विज्ञान, सीबीएससी मान्यता प्राप्त पब्लिक इण्टर कालेज में संगीत शिक्षिका, गौतम गोत्र, ग्रहकार्य में दक्ष, शुद्ध शाकाहारी, सुन्दर, सुशील, व्यवहार कुशल के लिए सेवारत या व्यावसायी वर चाहिए। जाति बंधन नहीं। **सम्पर्क करें- हेमचन्द तिवारी, वेव इण्डस्ट्रीज, शुगर मिल, जोया रोड, अमरोहा (8958902427)**

◆मेरी पुत्री गार्गी शर्मा, आयु 22 वर्ष, कद 5'-6'', बी.ए., बी. एड. तथा एम.ए. अध्ययनरत्, सुन्दर, सुशील, पिता राजकीय सेवा में अधिकारी एवं माता अध्यापिका, के लिए आर्य विचारों के सुयोग्य वर की आवश्यकता है। **सम्पर्क करें- सुमन कुमार वैदिक, जे-३८०, बीटा-II, ग्रेटर नोएडा, उ.प्र. (09456274350)**

◆मेरी पुत्री आयु 26 वर्ष, बी.टेक., अहेरिया राजपूत, सी.आर. पी.एफ. में सहायक कमांडेन्ट (क्लास-1 ऑफिसर), पिता जिला स्तरीय अधिकारी को आर्य विचारधारा का सुयोग्य वर चाहिए। जाति बंधन नहीं।

सम्पर्क करें- ओमप्रकाश आर्य, कार्यालय- जिला विद्यालय निरीक्षक,मेरठ (उ०प्र०) (09719199418)

वधू चाहिए

◆गुप्ता वैश्य 5'-4'', निजी व्यवसाय, अच्छी आय, आयु 40 वर्ष, परित्यक्त एक पुत्र आयु 9 वर्ष को 35 वर्षीय वधू चाहिए। विधवा, बांझ मान्य। जाति बंधन नहीं। **सम्पर्क करें- मुकेश कुमार गुप्ता पुत्र स्व. श्री रणवीर शरण गुप्ता, मौहल्ला किला, सनातन धर्मशाला के पास, वन्स मसाला चक्की, अफजलगढ़, जिला- बिजनौर (08881017248)**

◆मेरे पुत्र सुमित अग्रवाल, आयु 38 वर्ष, 5'-9'' आकर्षक व्यक्तित्व (एम.ए. हिन्दी), एम.फिल, आइजीडी (बोम्बे), जूनियर म्यूजिक डिप्लोमा, ल्युब्रिकेटिंग ऑयला का निजी व्यवसाय, आय पांच अंकों में, को सुयोग्य वधू चाहिए। तलाकशुदा, विधवा भी मान्य, जातिबन्धन नहीं। सम्पर्क-विनोद कुमार, 51, मौह०- सोसायट, मण्डी धनौरा (अमरोहा), फोन : 08923285659

◆मेरे पुत्र अभय कुमार अग्रवाल, आयु 26 वर्ष, 5'-8'' आकर्षक व्यक्तित्व, रंग साफ (इंटर मीडिएट), निजी दुकान व मकान, को सुन्दर, सुशील वधू चाहिए। ब्राह्मण व विश्नोई भी मान्य। **सम्पर्क- सुभाष कुमार अग्रवाल, स्वीटी जनरल स्टोर एवं गिफ्ट सेंटर, फल चौरहा, जामा मस्जिद, धामपुर (बिजनौर) उ.प्र. फोन : 09897743716**

वर-वधू की तलाश के लिए आज ही इस वैवाहिक विज्ञापन कॉलम का उपयोग करें, और पाएं उत्तम रिश्ते ही रिश्ते....

जब शिवरात्रि 'बोधरात्रि' बनी

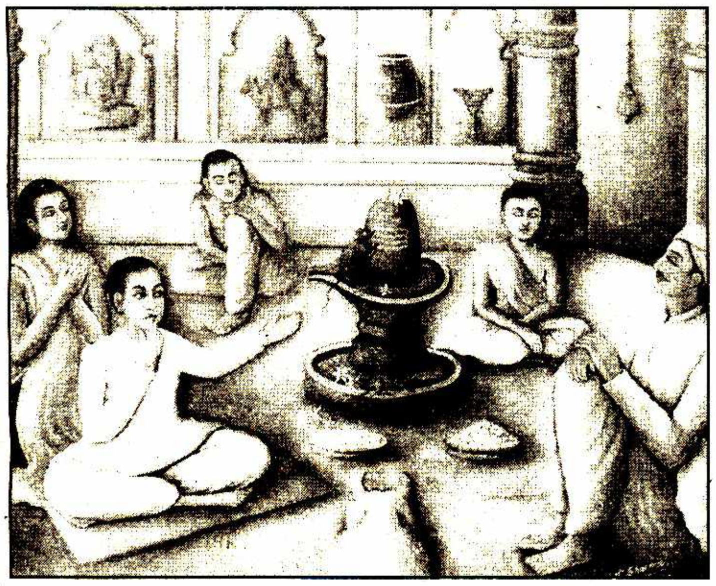

विदेशी दासता, रूढ़िवाद, जातिवाद व सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार के साथ ही वेदों का पावन व क्रांतिकारी संदेश

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जिस समय प्रादुर्भाव हुआ उस समय सारा देश रूढ़िवादिता, ढोंग, अंधविश्वास, छुआछूत, अशिक्षा व सामाजिक कुरीतियों की दलदल में फंसा हुआ था। देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। राष्ट्र शक्ति सर्वथा क्षीण हो चुकी थी। फाल्गुन कृष्ण १० सं. १८८१ वि. तदनुसार १२ फरवरी सन् १८२४ को काठियावाड़ प्रदेश के टंकारा नगर में एक समृद्ध, संभ्रान्त औदिच्य कुल में स्वनाम धन्य श्री कर्सनजी तिवारी के घर में आशा की एक किरण का उदय हुआ जिसका नामकरण मूलशंकर किया गया। कालांतर में यही बालक महर्षि दयानन्द सरस्वती के रूप में विश्वभर में सुविख्यात हुआ।

वेदों के प्रबल उद्घोषक, स्वराज्य के सर्वप्रथम सन्देशवाहक, नारी उद्धारक, राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नायक तथा महान सुधारक स्वामी महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन में एक छोटी सी घटना घटित हुई जो परिमाण में छोटी सी थी किन्तु परिणाम की दृष्टि से बहुत बड़ी थी जिसने उन्हें मूलशंकर से महर्षि दयानन्द बना दिया वो घटना थी टंकारा के शिवाल्य में शिवरात्रि के दिन व्रत करते हुए चूहे की घटना से बोध का होना। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी संवत् १८९४ विक्रमी की यह घटना निश्चय ही स्मरणीय है। शिवालय में समस्त भक्तगण बड़ी श्रद्धा के साथ पूजा-अर्चना में तल्लीन थे। सभी को सारी रात जागरण करना था परन्तु रात्रि के तीसरे पहर तक बालक मूलशंकर को छोड़कर सभी भक्तगण यहां तक पंडे-पुजारी तथा पिताश्री कर्सनजी भी निद्रा देवी के पाश में आवद्ध हो गये। तभी मूल जी ने देखा कि चूहे आकर शिवलिंग पर चढ़े प्रसाद को उछल कूदकर छा रहे हैं। मूलशंकर के चित्ताकाश में अनेक विचार तरंगें उत्पन्न होने लगीं और प्रश्न कोंधने लगे। वे सोचने लगे कि सर्वशक्तिमान कहे जाने वाले त्रिशूलधारी शिव जी पर यह क्षुद्र प्राणी कैसे उछल-कूद मचा रहे हैं। क्या यही शिव वास्तव में सच्चे प्रलयंकारी शंकर हैं। ऐसे अनेकानेक प्रश्नों का समाधान न तो पिताश्री कर सके और न ही अन्य पंडित पुजारी। यही घटना बालक मूलशंकर के जीवन को आसाधारण मोड़ देने में सफल हुई और यहीं से उन्हें जड़ पूजा की निस्सारता का बोध हुआ और यहीं से सच्चे शिव के मर्म जानने का संकल्प जागृत हुआ। एक के बाद एक दो और बड़ी घटनाएं उनके जीवन में घटीं- छोटी बहन की हैजा के कारण मृत्यु और उनके अत्यन्त प्रिय चाचा की मृत्यु। ये वे घटनाएं थीं जिन्होंने उनके जीवन में निर्णायक मोड़ दिया। वे सोचने लगे कि क्या मृत्यु अवश्यंभावी है? क्या एक दिन मैं भी इसी प्रकार मर जाऊंगा? तथा संसार के जितने भी जीव हैं वे भी एक दिन न बचेंगे? अतः वे सोचने लगे कि कुछ ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे यह दुख छूटे और मुक्ति हो। इसी भावना से उनका चित्त वैराग्य से भर उठा और एक दिन वे इन्हीं झंझावातों से संघर्ष करते हुए वैराग्य की ज्ञानाग्नि से ज्योतित होते हुए गृह त्याग करके अन्ततः यत्र-तत्र भटकते हुए युग प्रवर्तक व्याकरण के सूर्य दंडी स्वामी गुरुवर विरजानन्द की शरण में मथुरा जा पहुंचे। गुरु-शिष्य का यह ऐतिहासिक व पावन मिलन कालांतर में सम्पूर्ण विश्व को एक नूतन दिशा प्रदान करने वाला सिद्ध हुआ।

सोम से मधुरता मिलेगी तथा प्रभु स्तवन करेंगे

डॉ. अशोक आर्य

जब भी कभी इस शरीर में प्रभु का प्रकाश होता है तो शरीर रूपी यह घर एक विचित्र सी आभा से दीप्त हो जाता है, चमक जाता है तथा जब इस चमक से युक्त शरीर में सोम की रक्षा होती है तो इस शरीर में एक स्थिर शक्ति आती है, विचित्र सा आनंद अनुभव होता है, मधुरता से भरा हुआ यह शरीर प्रभु स्तवन की ओर जाता है तथा प्रभु चरणों में रहने की वृति इस शरीर की बनती है। इस तथ्य को ऋग्वेद के मंडल 8 की ऋचा 91 के मन्त्र संख्या 2 में इस प्रकार बताया गया है :-

असौं य एषे वीरको गृहंगृहं विचाकशत।
इमं जम्भसुतं पिब धा नावन्तं करम्भिणमपुवन्तमुक्थिनम॥
ऋग्वेद ८.९१.२॥

मन्त्र कहता है कि हे परमपिता प्रभु! आप शत्रुओं को अति शीघ्रता से कम्पित कर देते हो, भयभीत करने वाले हो। आप के सहयोग से हमारे सब शत्रु शीघ्र ही हमारे से दूर भाग जाते हैं, पराजित हो जाते हैं। इस प्रकार आप के सहयोग से यह पराजित शत्रु पुनः हमारे पर आक्रमण करने का साहस ही नहीं करते। इस प्रकार आप जब हमें प्राप्त होते हैं तो हमारे इस शरीर रूपी गृह का प्रत्येक भाग, प्रत्येक घर आप ही के कारण दीप्त होता है, चमकता है, प्रकाशित होता है। जब हमारे अंतः करण में, हमारे हृदयों में आप का प्रकाश होता है तब तब हे प्रभु! हमारा यह शरीरिक घर दीप्त हो जाता है, चमकने लगता है, सब और से प्रकाशित हो जाता है।

मन्त्र आगे उपदेश कर रहा है कि हे प्रभु हमारे जबड़े सोम के निर्माण का काम करते हैं। जब हम जबड़ों से भोजन चबा कर करते हैं तो इनमें से सोम पैदा होता है। इस पैदा हुए सोम को यह शरीर ही पी ले ऐसा अनुग्रह हम पर करिये, ऐसी कृपा हम पर करें प्रभु। वास्तव में यह सोम ही तो है जो हमारे शरीर को धारण करता है, यह सोम ही है जो आनंद से वशीभूत हो हमारा आलिंगन करता है, यह सोम ही हमारे जीवन को आनंदमय बना कर आनंद से भरता है।

यह सोम ही हमारे शरीर में मधु के छत्ते का कार्य करते हुए हमारी वाणी को हमारे व्यवहार को मधु के ही समान मधुर व मीठा बना देता है। यह सोम ही स्तोत्री वाला होता है। यह सोम ही हमारे शरीर में सुरक्षित होने पर इस की रक्षा करने वाले शरीर अथवा व्यक्ति को प्रभु चरणों में बैठने का प्रभु स्मरण का, प्रभु स्तवन का अधि कारी बना देता है।

हमारी वृति इस सोम के ही कारण प्रभु की ओर लगती है।

104, शिप्रा अपार्टमेन्ट,
कोशाम्बी,
गाजियाबाद- 201010
चलवार्ता- 09718528068

जनवाणी

भ्रष्टाचार और प्रशासन

महोदय,

इस समय खुदरा कारोबार सब जगह छाया हुआ है। कोई उसे आर्थिक संकट का अमृत बता रहा है, तो कोई उसे अर्थव्यवस्था को तबाह करने वाला विष। इन बातों में मतभेद हो सकता है। परन्तु राजनीति में दखल रखने वाला आम कार्यकर्ता इस पर चुप्पी साधे हुए है। वर्तमान में हम सरकार से क्या उम्मीद करते हैं? एक तो सरकार तरक्की वाली नीति बनाए, दूसरे स्वच्छ प्रशासन दे। इस समय सरकार की नीतियां जनता के हितों को ध्यान में रखने की बजाय निहित स्वार्थों के पक्ष में बनायी या बदली जाती हैं। यह बात 2जी से लेकर कोयला घोटाले तक में नजर आती है। आज के समय में एक धारणा यह बन चुकी है कि भ्रष्टाचार ही सबसे बड़ी नीति है, जिसका दूर होना अत्यंत आवश्यक है। यहां अपवादों को छोड़कर देश की राजनीति का यह सच है कि भ्रष्टाचार राजनीति में पैर जमा चुका है। यह आम घटना है कि बदमाश किसी रास्ते में जा रही महिला पर हमला करके उसके गहने लूटकर ले गये। किसी आभूषण कारोबारी के आभूषण लूटकर ले गये। किसी के घर पर चोरों ने आक्रमण करके मालिक को भारी नुकसान पहुँचाया। गाड़ियां चोरी हो जाती हैं। जाहिर तौर पर इसके लिए प्रशासन की ढिलाई जिम्मेदार है। प्रशासनिक तन्त्र को दुरुस्त रहना चाहिए ताकि देश में ऐसी घटनाएँ रोकी जा सके। लोगों की परेशानियां बढ़ रही हैं इसके लिए प्रशासन को सुधारने की आवश्यकता है। गौरतलब है कि देश की वर्तमान व्यवस्था प्रशासन पर निर्भर है जिसका मजबूत होना अति आवश्यक है। बहुत से मामलों में एक-दूसरे पर हावी होने की फिराक में लगे आफिसर्स जनता को परेशान करते हैं। अब हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सार्वजनिक जीवन में किसी को आईना वही दिखा सकता है जो स्वयं उसके सामने आने से न डरता हो।

सफल सरकार वही है, जो देश को तरक्की के रास्ते पर आगे ले जाए। सत्ता तक पहुंचने वाली पार्टी जिस वायदों के साथ लोगों से वोट हासिल करती है, उन्हें पूरा करने के लिए ईमानदार कोशिश होनी चाहिए। भ्रष्टाचार तरक्की के मार्ग में अवरोध पैदा करता है, उसे दूर करना अति आवश्यक है।

-अतुल कुमार शुक्ला
लाइनपार, मुरादाबाद

महत्वपूर्ण सुझाव

महोदय,

आर्यावर्त केसरी में बाल-जगत, नारी-जगत आदि स्तंभों के साथ ही आध्यात्मिक चिन्तन पर भी विशेष सामग्री नियमित रूप से दिया करें। यदि केसरी के प्रथम पृष्ठ पर एक वेद मंत्र की व्याख्या भी दे सकें तो यह और भी उत्तम होगा।

प्रियतम देव, मोगा (पंजाब)

अफजल को फांसी एक देर से लिया गया सही निर्णय

महोदय,

कसाब के बाद अफजल को दी गई फांसी की सजा का निर्णय आतंकवाद और अलगाववाद के खिलाफ एक विशेष निर्णय है। राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी और केन्द्र सरकार को इसका श्रेय जाता है। 2001 में संसद पर हुआ हमला एक लोकतांत्रिक देश के मान-सम्मान पर हुआ हमला था। कसाब और अफजल को फांसी पर लटका कर भारत ने विश्व को यह सन्देश दिया है कि भारत के खिलाफ षड्यन्त्र रचने वाले को सख्त निर्णय से गुजरना होगा और उसे मुंहतोड़ जबाब दिया जायेगा। आतंकवाद के लिए पाकिस्तान और अफगानिस्तान को दोषी माना जाता है। भारत को जिन आतंकवादियों की तलाश है, उनके तार पाकिस्तान से जुड़े हैं। पाकिस्तान में चुनी सरकार वही करती है, जो सेना कहती है और सेना वही करती है जो भारत के खिलाफ हो। अफजल को फांसी देने में देरी की गई, जिसका कारण वोट बैंक की राजनीति था। यूपीए सरकार लोकसभा चुनाव में महंगाई और घोटालों से हटकर जनता का ध्यान आतंकवादियों की ओर लगाना चाहती है, जिनसे निपटना बहुत आवश्यक है।

-जगमोहन मिश्र,
कोलकाता (प. बंगाल)

मानव मात्र के लिए ऋषिवर दयानन्द की आदर्श शिक्षाएं

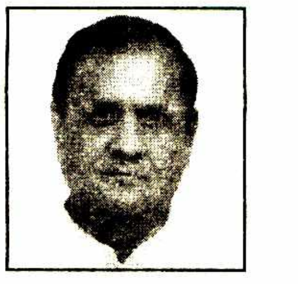

आचार्य भगवानदेव वेदालंकार

इस आर्यावर्त देश में समय-समय पर ऋषियों का, योगियों का, त्यागी-तपस्वी महानपुरुषों का अवतरण होता रहा है। जैसे सतयुग में सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र हुए, त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र, द्वापर में योगीराज श्रीकृष्ण का जीवन अनुकरणीय रहा है। कलियुग में वेदों के विद्वान, धर्मशास्त्रों के ज्ञाता, तर्क शिरोमणि, महर्षि दयानंद सरस्वती की आदर्श शिक्षाएं, प्रेरणाप्रद विचार, उनका आदर्श जीवन त्याग-तप मानव-मात्र के लिए अनुकरणीय रहा है। उनके कल्याणकारी आदर्शों पर, शिक्षाओं पर चलने से ही मानव मात्र का कल्याण संभव है।

१- सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की शिक्षा- स्वामी दयानंद जी बड़े ही ज्ञानी पुरुष थे। उन्होंने पूरे अनुभव से, वेद शास्त्रों के प्रमाण देकर एक शोध ग्रन्थ, ज्ञान का भंडार, अनेक शिक्षाओं से परिपूर्ण, क्रांतिकारी ग्रन्थ का प्रकाश किया, जिसको पढ़कर, स्वाध्याय करके न जाने कितने सपूतों ने अपने जीवन का कायाकल्प किया, जीवन-जीने के वास्तविक उद्देश्य को जाना। उन महापुरुषों में उदाहरण स्वरुप कुछ नाम जैसे कि स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द, पं. लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. अखिलानन्द जी, स्वामी सत्यानंद, श्याम जी कृष्ण वर्मा, ब्रह्मचारी, रामप्रसाद बिस्मिल आदि अनेकों भारत माता के वीर सपूतों ने "सत्यार्थ प्रकाश" को पढ़ा और इसके बाद जीवन जीने का लक्ष्य प्राप्त किया। यह ग्रन्थ 14 समुल्लास अर्थात चौदह विभागों में रचा गया है।

सत्यार्थ प्रकाश का प्रयोजन- " मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात जो सत्य है, उसको सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। इसलिए विद्वान-आचार्यो का यही मुख्य काम है कि वे स्वयं अपना हित-अहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

२- ईश्वर के 'ओ३म्' नाम का ध्यान करने की शिक्षा- महर्षि स्वामी दयानंद जी से पूर्व देश में लोग वेद के सच्चे मार्ग को भूल चुके थे। बहुदेववाद का प्रचलन था। ईश्वर के स्थान पर लोग प्रकृति की, जैसे तुलसी, पीपल जैसे वृषों की पूजा करने लगे थे। काली देवी, कोई दुर्गा, कोई लक्ष्मी, कोई गणेश, कोई शिवलिंग, कोई विष्णु की, कोई सर्पधारी शिव की मूर्तियां बनाकर, गन्डे ताबीज, तिलक, मालाएं पहनकर, झांज-मंजीरा बाजा बजा-बजाकर, नाच-कूद उछल-उछलकर पूजा करने की वेद विरुद्ध परिपाटी जन्म ले चुकी है। ऐसे समय में महर्षि ने हमें वेदों का, शास्त्रों का, उपनिषदों का प्रमाण देकर ईश्वर के सर्वरक्षक, सृष्टिकर्ता 'ओ3म' नाम का ध्यान करने की शिक्षा प्रदान की।

"एको ब्रह्म द्वितीयो ने अस्ति" ईश्वर जो ब्रह्म रुप है, सबसे बड़ा है। सबसे महान है। वह एक ही है। वह दो तीन या उससे अधिक संख्या वाला नही है।

"ओं खम्ब्रह्म" (यजुर्वेद अ. -40, मन्त्र- 17) अर्थात् उस आकाश के समान व्यापक परमेश्वर का मुख्य और निज नाम ओ3म ही है। हमें उसी एक परब्रह्म परमेश्वर रुपी ओ3म् का ही ध्यान करना चाहिए।

आदर्श शिक्षायें- सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ नामों की व्याख्या की गई है, जैसे- सबसे बड़ा होने से ईश्वर का नाम 'ब्रह्म'; जो बहुत प्रकार से जगत् को प्रकाशित करे, इससे ईश्वर का नाम 'विराट'; जो ज्ञानस्वरुप, सर्वज्ञ , जानने, प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम अग्नि है, जो शिष्ट, मुमुक्षु मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है, जो सबसे श्रेष्ठ है, इससे उस परमात्मा का नाम 'इन्द्र'; चर व अचर रूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम विष्णु है; जो सबका रक्षक जैसे पिता अपनी सन्तानों पर सदा कृपालु होकर, उनकी उन्नति चाहता है, जो कल्याण स्वरुप और कल्याण का करने हारा है इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'शिव' है; ये सभी नाम ओ3म् के ही विशेषण हैं। इसीलिए परमेश्वर के इस छोटे से 'ओ3म्' नाम का ही ध्यान, मनन एवं चिन्तन करना चाहिए। इससे जीवन में सुख, शान्ति और आनंद की वृध्दि होगी। समस्याओं का सफल निदान होगा। किसी कवि का यह कथन कितना सार्थक है कि- **"ओम नाम सबसे बड़ा, इससे बड़ा न कोय/ जो इसका सुमरन करे, तो दुख काहे को होय//स्वांस-स्वांस पर ओ३म् भज, वृथा स्वांस मत खोय/ न जाने इस स्वांस का, आवन होय न होय//**

अन्ध विश्वासों से बचने की शिक्षा- स्वामी दयानंद जी का जन्म जिस युग में हुआ, उस युग में चारों ओर देश में, समाज में तथा परिवारों में अविद्या, अन्ध विश्वासों का अज्ञानान्धकार फैला हुआ था। उदाहरण के रुप में-

1.व्यक्ति अपने काम पर जा रहा होता, बिल्ली रास्ता काट जाती, व्यक्ति डर जाता था, अब काम नहीं बनेगा।

2. किसी को उसी समय छींक आ जाती, चाहे वह छींक जुकाम, नजला या बीमारी अवस्था में ही आयी हो। वह रुक जाता था।

3. कोई एकाक्षी (काणा) व्यक्ति सामने आ जाता, उसे भी अपशकुन मान लिया जाता था।

4. इसी प्रकार उस समय स्त्रियों को पढ़ाना, अच्छा नहीं माना जाता था, नारी घर की चहारदीवारी में पर्दे में कैद थीं। गांव, देहात, मुसलमान परिवारों में आज भी कन्याएं शिक्षा ग्रहण नहीं कर पा रही हैं। इसके अतिरिक्त बाल-विवाह, अनमेल-विवाह, सती-प्रथा, विधवा- विवाह निषेध तथा बलि-प्रथा जैसी कुरीतियाँ, कुप्रथायें, कुत्सित रीति रिवाजों का स्वामी दयानंद ने और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने उन अन्धविश्वासों के विनाश के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की। साहित्य लिखा, गुरुकुलों की स्थापना की।

माता-पिता एवं आचार्य की शिक्षा- शास्त्रों में बच्चों के तीन उत्तम शिक्षक माने गये हैं अर्थात एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य। महर्षि याज्ञवल्यक्य का वचन है- **"मातृमान् पितृमान् आचार्यवान पुरुषो वेद:"** अर्थात् इन्हीं तीनों की उत्तम शिक्षा से मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ा भाग्यवान, जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। माता-पिता को अति उचित है कि वे शुद्ध शाकाहारी भोजन पर अधिक ध्यान दें। मद्य, नशीले पदार्थों, बुद्धिनाशक, रुक्ष पदार्थों का परित्याग कर, जो शान्ति, अरोग्य, बल बुद्धि, पराक्रम और सुशीलतम को बढ़ाने वाले पदार्थ हैं। जैसे-दूध , घृत, शहद, फल, सब्जी तथा उत्तमोत्तम अन्न पान की शिक्षा दें। किसी ने ठीक ही कहा है कि- **जैसा खाये अन्न वैसा रहे मन, जैसा पियो पानी वैसी बने वाणी।**

माता की शिक्षा- बच्चे की पहली गुरु माता को माना गया है। "माता निर्माता भवति" माता बच्चे को लोरियां सुना-सुना कर संस्कार देती है। बच्चे का निर्माण करती है। बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे, जिससे संतान सभ्य हो और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें। छोटे-बड़े, मान्य, पिता, माता, गुरु, आचार्य आदि के साथ शिष्टाचार का व्यावहारिक ज्ञान, बातचीत करने का तरीका, उनके पास उठने, बैठने आदि की भी शिक्षा दिया करें, जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न हो सके, बल्कि सर्वत्र प्रतिष्ठा हो। सन्तान किसी धूर्त, ढोंगी, बेहरुपिया के बहकावे में न आवें, जिससे फलित ज्योतिष, भूत-प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो। इसी प्रकार पिता शिक्षा करे कि हमारी सन्तानें चोरी, आलस्य, प्रमाद, नशीले मादक द्रव्य, मिथ्या भाषण, हिंसा, क्रूरता, द्वेष, मोह आदि दोष छोड़ने के लिए तैयार रहें। छल, कपट, धोखा देना, अभिमान करना, कृतघ्नता से अपना हृदय दुखी होता है। दूसरों का तो कहना ही क्या। क्रोधादि दोष छोड़ और कटु-वचन को त्यागकर, शान्त और मधुर वचन ही बोलें। बड़ों का सम्मान करें, उन्हें ऊंचा आसन दें, विनम्रता से नमस्ते करें।

"यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपस्यानि नो इतराणि" यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है। माता, पिता और आचार्य अपनी सन्तान और शिष्यों को सदा यह उपदेश करें कि जो जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं, उन उन का ग्रहण करें और यदि हमारे जीवन में भी यदि कोई दुर्गुण, दुर्व्यसन, दुर्व्यवहार आदि दोष, कमजोरी हैं, उनका त्याग करें। सज्जनों का संग और दुष्टों का त्याग करें। विधिपूर्वक ईश्वर की उपासना, प्रार्थना करें। मद्य, शराब, अंडा, मांस आदि के सेवन से अलग रहें। जिस प्रकार अरोग्य, विद्या और बल प्राप्त हो, उसी प्रकार का शुद्ध शाकाहारी भोजन प्राप्त करें।

आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द जी की शिक्षा की और अधिक आवश्यकता- कहने की और अधिक आवश्यकता नहीं, सारी उन्नतियों का केन्द्र ऋषि-महर्षियों की वैदिक शिक्षा है। आज की युवा पीढ़ी नवयुवक एवं नवयुवतियां दिशा-भ्रमित हैं। उनके दिशाहीन आदर्श टीवी चैनल या फिल्मों के नायक एवं नायिकाएं हैं, जिनके द्वारा लगातार अश्लीलता, चरित्रहीनता, मॉडल के नाम पर अर्ध नग्नता, पॉप डान्स आदि की अप संस्कृति फैलाई जा रही है। इससे नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है। आज के इस अत्यन्त भौतिक युग में भी महर्षि दयानंद जी प्रेरणाप्रद आदर्श शिक्षाओं की और अधिक आवश्यकता है।

वैदिक प्रवक्ता
A-94, विकास नगर, फेस-3
नई दिल्ली-59
मोबाइल न. 09250906201

पृष्ठ ८ का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन.....

क लोगों तक वेदों का सन्देश पहुंचाने के लिए विज्ञान और तकनीकी के प्रयोग का नवीन उपक्रम भी अति सराहनीय रहा। विचार टीवी का फिल्मोत्सव, लेजर शो, सत्यार्थ प्रकाश का ऑडियो तथा इंटरनेट संस्करण, ई-लाईब्रेरी तथा आर्यसमाज की वैब पोर्टल की लॉन्चिंग "पुराणमित्येव न साधु सर्वम्" अर्थात 'पुरातन पद्धति का अनुसरण ही हमेशा उचित नही होता है' का उद्घोष करते हुए कह रही थी कि महर्षि दयानंद के अनुयायियों की दृष्टि हमेशा "नवनवोन्मेषशालिनी" रही है।

महासम्मेलन में जहां एक तरफ वेद दर्शन उपनिशद तथा आधुनिक विषयों पर गंभीर मंथन किया जा रहा था वहीं दूसरी ओर आर्य वीरदल की शाखा में प्रात: तथा सायं आर्यवीरों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन शस्त्र संचालन सबके मन को मोह रहा था। आर्यवीरों का यह कमाण्डो ट्रेनिंग प्रदर्शन यजुर्वेद के मन्त्र का जीवन में यथार्थ चित्रण कर रहा था "यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च समयन्चौ चरते सह" की जीवन में ब्रह्मत्व तथा क्षत्रित्व का समन्वय होना चाहिए। महासम्मेलन के विश्व ग्राम का यह स्वरुप संसार के लोगों से कह रहा था कि आर्य समाज शारीरिक आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति का प्रथम सोपान है। आधुनिक सुविधाओं व व्यवस्थाओं से परिपूर्ण महासम्मेलन के इस विश्वग्राम में बांस तथा पर्णकुटी से निर्मित विशाल एवं लघु यज्ञशाला और इनमें गुंजायमान वेदमन्त्रों का सस्वर पाठ **"संगच्छध्वम् संवदध्वम्, सं वो मनांसि जानताम्"** आर्यों को आदेश दे रहा था कि ऐ आर्यो! महर्षि के दिव्य संदेश को इस छोटे से विश्वग्राम से निकाल कर संसार के कोने में पहुंचा दो और पाखंड, अन्धविश्वास तथा अविद्या के तम को हरके, वेद के सूर्य से संसार को प्रकाशित कर दो।

२/२७९, स्वामी विवेकानन्द नगर, कोटा

आवश्यकता है

आर्यावर्त केसरी के लिए प्रसारकों की, जो गांव-गांव, नगर-नगर घूमकर सदस्यता का विस्तार कर सकें। वेतन पाँच से दस हजार रुपये प्रतिमाह। आवागमन, भोजन व आवास आदि सम्बन्धी वास्तविक व्यय अलग से देय होंगे। आर्य विचारधारा के उत्साही व कर्मठ महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें-

डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक,
आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा
मोबा.- 09412139333

दहेज मांगना मातृशक्ति का अपमान

वैद्य महावीर प्रसाद आर्य
'आयुर्वेद-विशारद'

जन्म कन्या का

बांयी आंख हुई अति भारी बांया पैर उठे पहिले।
चलते फिरते आहट ही से माँ का अन्तस्तल दहले।
माँ ने देखा बांया स्तन दूध प्रथम उसमें आया।
लेट गई वह आंख मूंद घोर तिमिर सन्मुख छाया।
बोली धीमे गर्भवती तकदीर हमारी हेटी है।
बेटा नहीं गर्भ में अबके लक्षण दिखते बेटी है।
नौ महीने के बाद रात्रि में माता बहुत अधीर हुई।
ईश्वर जाने या वह जाने, जाने कितनी पीर हुई।
हुई होश बेहोश बेचारी काया से काया निकली।
निकली काया से काया या काया से भाया निकली।
सुना पिता ने सुता हुई है आंखे नीची कर लीं।
छिपे हुए जल-मुक्ताओं से भीजी निज पांखे करली।
मूंछ सतर थी नीचे करलीं बड़ी जोर छाती धड़की।
मानो भाग्य व्योम से कढ़कर पिता शीश बिजली कड़की।
दस्तौन हुआ न, दिया निमंत्रण पत्र लिखे न छपवाये।
हाथ पैर के खड़ुआ मामा करधनी तक नहीं लाये।
रूखी मन से छटी हुई पत्र लिखे न छपवाये।
आंगन बैठक दरवाजे न रंग बिरंगे पुतवाये।

वर की खोज

जब लली पड़ी 14 में पिता कढ़ा बाहर को।
या चला नापने दुखिया माया के गुरु सागर को।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण को निज रथ डाला।
वर इच्छित मिला न उसको भव सागर सब मथ डाला।
घर काम नहीं कुछ करता पेट कभी न भर पाता।
खाना क्या वह खाता खाना उसको खा जाता।
जब देख लली को लेता शोक उशांसे लेता।
कौन दिवस आये जब धरूं व्याह का छेता।
अन्तर में प्यारी कितनी पर जीवन को ओझिल लगती।
आंखों को हल्की लगती पर मन को बोझिल लगती।
जब नगर हलकी बरातें आती चढ़ती हैं नित प्रति सजकर।
हृदय कंपा देते हैं अंग्रेजी बाजे बजकर।
फिर चला खोजने वर को ले करके आश सम्बल।
लेकर के बिस्तर अपना ले एक पुराना कम्बल।
नातेदारी छानी मनुज मनुज अपनाया।
दर दर घूमा योगी बन घर घर अलख जगाया।
कन्या की शादी करना जीवन की एक तपस्या।
सुलझ कभी ना पाती ऐसी जटिल समस्या।
शादी तक ना जाने कितने दामाद बनाये मन में।
शादी तक ना जनो कितने सन्तुलन किये थे तन में।
मेरी बिटिया को भगवन् मिल जावे गढ़ी नवेली।
कभी कल्पना करता मिल जावें उच्च हवेली।
ऐसा वर मिल जावे हो पारस जिसके कर में।
प्रिय बिटिया रहे सुखारी नित कंचन बरसे घर में।
दश बीस जगह फिर आया पर जुगती कहीं न खाती।
लख पचास नकद ही हो जब भेंजे पीली पाती।
संख्या बढ़ती जाती पर दूरी नैंक न घटती।
घर वर देखे कितने पर सौदा कहीं न पटती।
भूखा प्यासा फिरता अधर तक पड़ गये काले।
पड़ गये घूमने से हा पैरों में कितने छाले।
दीन सुदामा दुखिया के दुखते थे पैर हवा से।
मिट गई विवाई जड़ से केशव की अश्रु दवा से।
इस दीन विचारे को हा अब कौन दवाई देगा।
मेट विवाई इसकी जग कौन भलाई लेगा।
प्रथम बार ही दीन सुदामा निकला था घर से।
पैरों के कंटक उसके काटे थे केशव कर से।
लेकिन यह तो दुखिया सौ बार कढ़ा है घर से।
पर एक बार भी कांटे ना काटे केशव कर से।
दीन सुदामा के तो भगवान द्वारिका रोते।
पर इस दुखिया के भगवान कहाँ पर सोते।

ग्राम व पोस्ट- विसावर (हाथरस) उ.प्र.

महर्षि दयानन्द सरस्वती

निर्मला आर्या

तुमने ऋषिवर दयानंद कितना जग का उपकार किया।
रच सत्यार्थ प्रकाश जगत में, नव प्रकाश संचार किया।
शिव मंदिर में आराधन को, बड़े भाव से आये थे।
सोये सारे भक्त न तुमने तनिक नयन झपकाये थे।
यह क्या? कैसा हुआ वाकया? चूहा इस शिवलिंग चढ़ा।
भक्षण कर मिष्टान्न आदि का, लेता था आनन्द बड़ा।
टूटा था विश्वास सेतु तब जाग उठा था प्रबल विवेक।
कैसा शिव यह, कैसी शक्ति? भगा न सका जो चूहा एक।
क्या रक्षित होगा जग शिव से, मन में अमिट हुई थी रेख।
चूहा छोड़ गया था उनके मन मानस में प्रश्न अनेक।
स्वर्ग सिधारी भगिनी प्यारी, सारे परिजन रोये थे।
दयानंद तो मौन भाव से, मृत्यु सोच में खोये थे।
तभी अचानक प्रिय चाचा भी जग से स्वर्ग सिधारे थे।
फूट-फूट रोये थे ऋषिवर, अश्रु न उनके थमते थे।
मृत्यु क्या, कैसे होती है, तत्व खोज संकल्प लिया।
उचट गया मन, उलझ गया मन गृह का था परित्याग किया।
घूम-घूम कर भटके थे तब, विरजानन्द-से गुरू मिले।
वेदों के मर्मज्ञ बड़े थे, ज्ञानी ध्यानी निपुण मिले।
वेद-धर्म का ज्ञान मिला औं संस्कृति के संरक्षण का।
शिक्षार्जन के बाद था आया मौका कर्ज चुकाने का।
बोले गुरूवर यही दक्षिणा, वेद धर्म विस्तार करो।
धर्म पताका फहराओं और सकल विश्व कल्याण करो।
निकल पड़े थे दयानंद तब, सत्य राह दिखलाने को।
अंध रूढ़िगत विश्वासों से, जग को मुक्त कराने को।
पाखंड खंडनी ध्वजा उठाई, आर्य जाति उत्थान किया।
निराकार ईश्वर सत्ता का, जग को दृढ़ विश्वास दिया।
सती प्रथा का कर विरोध नारी समाज को मान दिया।
पढ़ी लिखी शिक्षित हो नारी, पावन यह संदेश दिया।
नहीं श्रेष्ठ है बाल-विवाह, अन्याय नारी पे श्रेष्ठ नहीं।
खुलकर बिगुल बजाया तुमने, दी समाज को दिशा नई।
आज नहीं तुम दुनियां में पर, मार्ग अनोखा दिखा दिया।
तमस भरे मेरे भारत में, नव प्रकाश आलोक दिया।

राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
तलवण्डी, कोटा, (मो.-9460221173)

ग़ज़ल

सुमन कुमार आर्य
६९४-चेतन निवास,
जवाहर कालोनी,
सरवरनगर, अहमदाबाद

एशो आराम से तो, मंजिल फिर न मिले,
तन की नाव डूबेगी, साहिल फिर न मिले।
कोई भी पाप पहले, मिलने आता, फिर
मालिक बनता, ऐसा संगदिल फिर न मिले।
मद मोह की आदत ने, बर्बाद कर दिया,
क्रोध जैसा कोई, कातिल फिर न मिले।
जवानी में वृद्ध से, लगने लगे हैं हम,
ऐसी हालत में, प्रभु से दिल फिर न मिले।
तनाव से मरेंगे, पर हिंसा न छोड़ेंगे,
तब तो क्षमा जैसा, माहिर फिर न मिले।
सारे पुण्य भोग से हैं खत्म कर देते,
जीवन खत्म हुआ तो, सुख कल फिर न मिले।
राग द्वेष त्यागे जो, कुकर्म न करे वो,
बात पाप करने को, कोई बल फिर न मिले।

भ्रष्टाचारी जेल में

भ्रष्टाचारी देश के अब तक रहे दहाड़।
घोटाले पकड़े गये, रहना पड़ा तिहाड़।।
रहना पड़ा तिहाड़, बेल है जज ने टाली।
रहकर अब तो जेल मनाएंगे दीवाली।।
कहते कविवर 'सरस' विरस बेबस लाचारी।
कानूनी बंधन से त्रस्त हैं, भ्रष्टाचारी।।

-शिवअवतार सरस, मालतीनगर, मुरादाबाद।

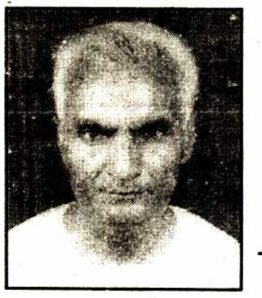

बसन्त

वीरेन्द्र कुमार राजपूत
8 बसन्तकुंज, 369/1 बसन्त
बिहार, फेज -1
देहरादून (उत्तराखंड)

मनुज हो गया क्रूर, नही वह दयावन्त लगता है,
बाहर क्या, घर द्वार गड़ाता हुआ दन्त लगता है,
नेता बनकर अपराधी, गुण्डे हैं मौज उड़ाते,
सच्चे इंसानों का रहना, अब दुरन्त लगता है।
घृणा, द्वेष, आतंक भरा, यह प्रजातंत्र लगता है,
हत्याओं, व्यभिचार भरा अब यहां सन्त लगता है,
खेतों-खेतों उगी नागफनियां, सरसों के बदले,
रूठा-रूठा हुआ देश से अब बसन्त लगता है।
निष्क्रियता आती है, यदि नर सुख अनन्त पाता है,
जीवन बनता भार, अगर चिरकाल दुःख पाता है,
हरी-भरी बूटोयुत चुनरी ओढ़ धरा कहती है,
रहते हैं समरूप अगर यह, तो बसन्त आता है।
अतिशय सुख भी क्या सुख है, तुम अपने सुख को बांटो,
अतिशय दुःख से ग्रस्त दिखे जो, उसके दुख को काटो,
जीवन के बसंत को जिसने, हमसे दूर किया है,
अपने सद्यत्नों से बढ़ती, उस खाई को पाटो।।

ग़ज़ल

इसरार 'सरमद', सम्पादक- क्रान्तिम्रष्टा, बछरायूँ (अमरोहा)

कर दे जीवन में उजियार, ओ नाविक उस पार उतार।
झूठ-सत्य में जो तकरार, तब हो जीवन का शृंगार।।
ए खग! क्यों सहे है अन्याय, तू भी करना सीख शिकार।
लुट-पिटकर भी क्यों है मौन, भर ले नयनों में अंगार।।
खिल न सकीं जो कलियाँ मित्र, उन्हें रो रही आज बहार।
सत्ता सुख-वैभव में व्यस्त, निर्धन, शोषण से लाचार।।
पढ़-पढ़ कर ग्रंथों के मंत्र, बदल सका है क्या संसार।
सांस त्रस्त! उसकी एक कलम, मिला नहीं जिसको अधिकार।।
'सरमद' पढ़ जन-मन का पाठ, जग देगा फिर नए विचार।।

विनाश काले विपरीत बुद्धि

पीयूष अरोड़ा चाँदपुर, बिजनौर (मोबा. : 9756500877)

विनाश काले विपरीत बुद्धि, एक सच्ची कहावत है।
भगवा को आतंक से जोड़ना इसका उदाहरण है।
भगवा रंग त्याग व तपस्या को दर्शाता है
इसमें आतंक कहाँ समाता है।
रावण भी तो वेदों का ज्ञाता था, जो विपरीत बुद्धि के कारण हारा था।
प्रभु राम ने भी भगवा को अपनाया था, दुष्टों को मार गिराया था।
ये जन जो भगवा को आतंक से जोड़ते हैं।
देशद्रोहियों के हौसलों को मजबूत करते हैं।
सद्बुद्धि दे भगवान इन्हें, जो भगवा को आतंक से जोड़ते हैं।

पल

मोहन लाल मगो
पी-६५, पाण्डव नगर,
मयूर विहार-१
दिल्ली- ११००९१

यह पल भयानक है, यह पल लाभदायक है
यह पल सब कुछ कर लेने लायक है
यह पल जीवन है, वो पल मृत्यु का परिचायक है
जो बिना कुछ किए ही निकल गया
मरने वाले की याद आती है,
गया पल लौट कर कभी नहीं आता,
श्रद्धा से कर्तव्य करें तो यह पल पल्लवित करेगा,
इस पल की पूजा करो, और कुछ करो न करो,
हर एक श्वांस से, मृत्यु की आगोश में जीवित रहो।

मेरी अपनी कुछ मान्यताएँ

खुशहाल चन्द्र आर्य

सुधी पाठकों से मेरा एक विनम्र निवदन है कि कुछ विषयों पर मेरी स्वयं की कुछ मान्यताएँ हैं, जो मेरे ही मस्तिष्क की उपज हैं, जिनको मैं इस लेख में उद्घृत करता हूँ। आशा है पाठक गण मेरी इन मान्यताओं से सहमत होंगे। यदि न हों, तो कृपया आप विरोध प्रकट करें, ताकि वाद-विवाद द्वारा किसी निर्णय पर पहुंच सकें। वे विषय इस भांति हैं- 1. वेद केवल मनुष्यों के लिए ही हैं: काफी व्यक्ति कह देते हैं कि वेद, ईश्वरीय ज्ञान है, इसलिए ईश्वर का सम्पूर्ण ज्ञान वेदों में विद्यामान है। पर यह कहना गलत है, कारण कि ईश्वर ने वेदों को केवल मनुष्यों के लिए ही बनाया है। मनुष्यों को अपने अन्तिम लक्ष्य 'मोक्ष' तक पहुँचने के लिए उसे क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए जिससे वे स्वयं को सुखी व प्रसन्न बना सकें, साथ ही दूसरों के जीवन को भी अपने जीवन के समान ही सनाते हुए अपने अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त कर सके। यह सब ज्ञान सृष्टि के आदि में चार ऋषियों द्वारा, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा थे, उनके मुख से चार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद क्रमशः उच्चारित करवाए। वैसे तो ईश्वर का ज्ञान अनन्त और अपार है। पर ईश्वर ने वेदों में उतना ही ज्ञान दिया है, जितना मनुष्य को आवश्यकता है। जैसे दसवीं कक्षा के विद्यार्थी को दसवीं कक्षा के कोर्स की ही पुस्तकें अध्यापक पढ़ाता है, जिनको पढ़कर वह दसवी की परीक्षा में अच्छी प्रकार उत्तीर्ण हो सके। इसका तात्पर्य यह नहीं कि अध्यापक को भी उतना भी ज्ञान है। अध्यापक में तो बी. ए व एम.ए के विद्याथियों को पढ़ाने की भी योग्यता है, पर दसवीं वालों को वह अध्यापक दसवीं कक्षा दूसवीं कक्षा के कोर्स की ही पुस्तकें पढ़ावेगा। इसी प्रकार ईश्वर में तो अनन्त और अपार ज्ञान है। वह तो पूरे ब्रह्माण्ड को सुचारू रूप से चलाता है। सृष्टि की उत्पत्ति, संचालन व विनाश भी करता है। साथ ही प्रलय व मोक्ष को उनकी अवधि के अनुसार चलाता है और जीवों के कर्म फलों को भी अपनी न्याय-व्यवस्था से निष्पक्ष मन से देता है। इस अथाह ज्ञान की मनुष्यों को कोई आवश्यकता नहीं, यह ज्ञान तो ईश्वर के लिए ही जरूरी है। इसलिए ईश्वर ने वेदों में उतना ही ज्ञान दिया है, जितना मनुष्यों को आवश्यकता है। इससे अधिक ज्ञान ईश्वर ने वेदों में नहीं दिया।

2. जब जीव मनुष्य देह छोड़ता है, तभी उसको आगे मिलने वाली योनियों का निर्धारण हो जाता है- मनुष्य योनि से जब जीव जाता है, तब उसकी तीन गतियां हो सकती हैं। पहली गति, जो मनुष्य अपने जीवन भर स्वार्थ का काम न करके निष्काम कर्म करता है यानी परोपकार के काम करता है, और जो अपने जीवन में ही समाधि तक पहुंच जाता है, वह जीव मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। इस अवस्था में वह 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्ष तक ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए परम आनन्द को प्राप्त करता रहता है। यह जीव की सर्वोत्तम गति है। दूसरी गति, मनुष्य शरीर में जो जीव अपने जीवन में पचास प्रतिशत या इससे अधिक शुभ कार्म करता है, उसे अगली योनि भी मनुष्य की ही मिलती है। जीव जितने प्रतिशत शुभकर्म अधिक करेगा, उसको उतनी ही अच्छी सुखदायक मनुष्य योनि मिलेगी। इसको मध्यम गति कहते है। तीसरी गति, जब जीव मनुष्य शरीर में पचास प्रतिशत् से अधिक अशुभ कर्म करेगा, उसको उतनी ही निम्न कोटि की योनि मिलेगी। सबसे निम्न कोटि की योनि वृक्षादि, इससे ऊपर कीट-पतंग और इससे ऊपर पशु-पक्षी की मानी जाती है। यह जीव की निकृष्ट गति है। इस गति में जब जीव मनुष्य शरीर छोड़ता है, तब वह कितनी निम्न योनियों से होकर पुन: मनुष्य योनि में आवेगा, इसका निर्धारण मनुष्य योनि छोड़ते समय ही हो जाता है। कारण, मनुष्य को छोड़कर बाकी सब योनियां केवल भोग योनियां हैं। इनमें जीव को उसके किये अच्छे या बुरे कर्मों का फल मिलता है। इसीलिए इनको भोग योनियाँ कहा जाता है। मनुष्य योनि से जब जीव पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि निम्न योनियों में जाता है, तो वह सबसे पहले अपने सबसे अधिक किये हुए अशुभ कर्मों के फल के अनुसार सबसे अधिक निम्न योनि वृक्षादि योनि में जाता है। फिर वह उन्नति करता हुआ ऊँची योनियाँ प्राप्त करता रहेगा। जब उसके पचास प्रतिशत या इससे अधिक अशुभ कर्मों का फल मिल चुकेगा, तब वह जीव पुन: साधारण मनुष्य योनि में आ आयेगा और फिर यहाँ से उसकी दूसरी यात्रा आरम्भ हो जायेगी। इस विषय पर मैंने कई वैदिक विद्वानों व अपने ही स्वाध्यायशील साथियों से विचार विमर्श किया। सभी ने कहा कि मनुष्य योनि से जीव अपने किये बुरे कर्मों के अनुसार एक बार तो निम्न योनियों में जाता है। उसके पश्चात उस निम्न योनि से आगे किस योनि में जायेगा, यह ईश्वर की इच्छा के अधीन है। यह निश्चय मनुष्य के विचारने का नहीं। परन्तु मेरा विचार यह है कि ईश्वर अपनी इच्छा के अनुसार कोई काम नहीं करता। वह जो भी काम करता है उसका कोई आधार आवश्य होता है, इसलिए इसका आधार यही है कि जीव ने, मनुष्य योनि में ही जो अच्छे-बुरे कर्म किये, उसी के आधार पर ईश्वर उस जीव को कितनी आगे की निम्न योनियाँ देगा, यह भी मनुष्य शरीर छोड़ते समय ही निश्चित कर देता है। उसी आधार पर जीव आठ, दस या इससे भी कम-अधिक निम्न योनियों में होकर पुन: मनुष्य योनि में आ जाता है। यही बात तर्क संगत लगती है।

3- गाय की योनि मनुष्य योनि से पहले की योनि होती है- मेरा लिखने का तात्पर्य यह है कि जीव जब मनुष्य शरीर छोड़ता है, तो वह अपने निम्न कोटि के पाप कर्म किये के अनुसार पहले वह जीवों की निम्न श्रेणी वृक्षादि योनियों में जाता है। फिर वह मनुष्य योनि में ही किये कर्मों के अनुसार ऊँची योनियों को प्राप्त करता रहेगा और मनुष्य योनि में आने से पहले वह गाय की योनि में आयेगा। फिर वह गाय से मनुष्य की योनि में आयेगा।

यानि गाय, मनुष्य की सबसे नजदीक की योनि है। इसलिए गाय, मनुष्य के पड़ौस की योनि हो गई। जिस प्रकार, पड़ौसी सबसे नजदीक होने से, उससे अधिक प्यार होता है और वे दोनों एक-दूसरे के दुःख-सुख के भागीदार होते हैं, उसी प्रकार मनुष्य को चाहिए कि वह गाय से सबसे अधिक प्यार करे और उसको कसाइयों के हाथों से मरने से बचाये, तभी मनुष्य पड़ौसी होने के कर्त्तव्य का निर्वाहन कर सकेगा। गाय का स्वभाव और उसकी उपयोगिता को देखकर ही मेरा यह विचार बना है कि गाय से ही जीव मनुष्य योनि में आता है।

4- स्वार्थ की परिभाषा- हम स्वार्थी उसी को कहते हैं जो दूसरों के काम नहीं आता हो और केवल अपने ही लाभ की सोचता हो। परन्तु वह न तो स्वार्थी है और न ही परमार्थी है, बल्कि वह एक ऐसा मूर्ख है, जो अपने हितों को ना समझ कर अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है। स्वार्थी वही होता है जो अपने हित की सोचे और वही काम करे जो उसके हित में हो। सच पूछो तो अपना हित अच्छे काम करने में है, जैसे सत्य बोलने में, ईमानदारी रखने में, किसी को धोखा न देने में, किसी का भला करने में। यदि आप यह गुण अपनाओगे तो सभी आप के ऊपर विश्वास करेंगे। आपका सम्मान होगा और जो आप करोगे, लोग उसी को सत्य मान कर आपकी बात को स्वीकार कर लेंगे। आप जो भी व्यापार करोगे उसमें वृद्धि होगी और सफलता आपके पैर चूमेगी। यदि आप बेईमानी करोगे, झूठ बोलोगे, पक्षपात करोगे और आप किसी का बुरा करोगे तो आप सबकी नज़र से गिर जाओगें। आप की बात का कोई विश्वास नहीं करेगा, तब आप कोई भी व्यापार करोगे, तो आपको असफलता ही हाथ लगेगी। इसलिए बुरे काम करने से आपका जीवन सुखी न बनकर दुःखी हो जाएगा। इस प्रकार आपने अपना हित न करके अहित किया। इसलिए आप स्वार्थी नहीं हुए। यदि आप स्वार्थी होते तो ईमानदार बनते, झूठ कभी नहीं बोलते, सदैव निष्पक्ष काम करते, परोपकार करते, तब आप अपने हितों की रक्षा करते और आप एक सच्चे स्वार्थी कहलाते। सब बातों का निष्कर्ष यही है कि अच्छे काम करना ही मनुष्य के हित में है और बुरे काम करना अहित में है। इसलिए सच्चा स्वार्थी वही है, जो अच्छे काम करता है और बुरे कर्मों से दूर रहता है।

c/o गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स,
180-महात्मा गांधी रोड, दोतल्ला,
कोलकाता-07 (फोन: 033-22183825)

एक वृद्धा के समक्ष नतमस्तक हो गया सम्राट सिकंदर

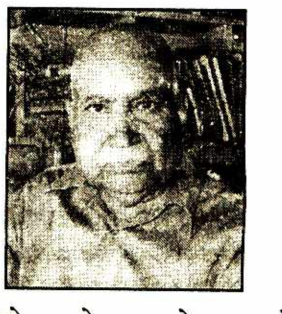

कृष्ण मोहन गोयल, कोट, अमरोहा

सिकंदर अत्यन्त महत्वाकांक्षी थ। वह धीरे-धीरे विश्वविजेता बनने की ओर अग्रसर हो रहा था। उसने अपनी सेना के बल पर विश्व के अनेक देशों को अपने आधिपत्य में ले लिया था। खून खराबे से वह बिल्कुल नहीं डरता था। सम्पूर्ण विश्व उसके नाम से कांपता था। एक दिन एक गहन रात्री में वह जंगल में भटक गया। भूख के मारे वह बदहाल था। अचानक उसे एक झोपड़ी में 'दीया' चमकता हुआ दिखाई दिया। वह अपने सैनिकों को रोक कर स्वयं झोपड़ी में गया। झोपड़ी में एक अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण सी वृद्धा दिखाई दी, तो सिकन्दर ने उससे कहा कि मुझे बहुत भूख लगी है। बुढ़िया ने दीया को तेज किया तो सिकन्दर को देखकर चौक गई। राजसी सैनिक की वेश-भूषा देखकर वह बोली तुम "सिकन्दर हो"।

सिकन्दर ने कहा कि हाँ मैं सिकन्दर हूँ। मेरे साथी बाहर खड़े हैं, मुझको एक थाली में कुछ खाने को दे दो। बुढ़िया ने अपना घर खोला और आधी रोटी उस सिकन्दर को दी। सिकन्दर ने उस रोटी को जैसे ही मुंह में रखा, तो बदबू से उसको थूक दिया। बुढ़िया बोली कि क्यों क्या हुआ? आठ दिनों से मैं इसी रोटी के टुकड़ों को खा रही हूँ। तेरे खौंफ से सारा जंगल विरान हो गया है। मजदूर भाग गये हैं, रोजी रोटी के लाले पड़ गये हैं, तेरा सर्वनाश क्यों नहीं हो जाता? तुम इतने निर्दयी क्यों हो! क्या तुम्हारी माँ ने तुम्हें यह ही सिखलाया कि दूसरों की रोजी-रोटी छीनो? यदि मेरा बेटा ऐसे काम करता तो मैं उसको जान से मार देती? विश्व विजेता सिकन्दर उस जीर्ण-शीर्ण वृद्धा के आक्रोश के सामने नत मस्तक हो गया और अपने हाथ की अंगूठी उतारकर उसको दी। बुढ़िया ने वह अगूंठी बाहर फेंकते हुए कहा कि तुमने यदि अपनी माँ का दूध पिया हो तो तुरन्त वापस चले जाओ। सिकन्दर उस वृद्धा की तेज आवाज के सामने नहीं रूक सका और घोड़े पर बैठकर भाग गया।

शहीदी सम्मेलन ०१ से

कादियां (पंजाब)। अमर शहीद पंडित लेखराम का शहीदी सम्मेलन उनकी पावन स्थली में पंडित लेखराम स्मारक मण्डल द्वारा 01 से 06 मार्च तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा चैतन्य मुनि होंगे। मंत्री रमेश भण्डारी व संयोजक ओमकार शास्त्री के अनुसार रात्रिकालीन बेला में वेदकथा होगी तथा 06 मार्च को मुख्य समारोह होगा।

१७ मार्च को होगा आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. का त्रैवार्षिक चुनाव

प्रो. कुलश्रेष्ठ को पत्नी शोक

जयपुर। हिन्दी के प्रख्यात विद्वान तथा मोहनलाल सुखाड़िया, राजस्थान विश्वविद्यालय, उदयपुर के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा कुलश्रेष्ठ (68) का 14 जनवरी को हृदय गति रूक जाने से आकस्मिक निधन हो गया है। राजस्थान में झुंझुनु से प्रधानाचार्या पद से सेवानिवृत्त श्रीमती कुलश्रेष्ठ मृदभाषी, सरल व सहज हृदया महिला थीं। उनके निधन पर परिजनों, शिक्षाविदों तथा विभिन्न सभाओं ने गहन शोक व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति की ईश्वर से प्रार्थना की। हार्दिक श्रद्धांजलि।

वेद-वेदांग के प्रकाण्ड मनीषी स्मृति शेष

'आर्यरत्न' आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री

डॉ. राम बहादुर 'व्यथित'

दिव्यात्माएँ युगों में धरती पर अवतरित होती हैं। वे अपने दिव्य गुणों का आलोक पृथ्वी पर बिखेरती हैं, धरती का सन्ताप आत्मसात् करके वे जनता-. जनार्दन को अपना अमृतमय सन्देश देती हैं और अपनी तपश्चर्या पूर्ण करके, इहलोक से विदा होकर वे अन्तरिक्ष में विलीन हो जाती हैं। ऐसी दिव्यात्माएँ जरा और मृत्यु के बन्धनों से परे होती हैं। अपने यशः शरीर से वे इस धरती पर सदैव विद्यमान रहती हैं-

"जयन्ति ते महाभागाः
जनसेवापरायणाः।
जरामृत्युभयं नास्ति येषां
कीर्तितनोः क्वचित्"॥

आर्य-रत्न, आचार्य-प्रवर डॉ. विशुद्धानन्द मिश्र ऐसे ही तपः पूत ऋषि थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव-समाज के लिए समर्पित कर दिया, जो वेद-ज्ञान के प्रखर सूर्य होने के बावजूद अत्यन्त सौम्य, सरल और विनम्र थे, जो संस्कृत, अरबी, फारसी के विद्वान होकर भी अहंकार से विमुक्त थे, संस्कृत के प्रकाण्ड मनीषी और यशस्वी कवि होने के उपरान्त भी वे अपनी शिष्य-मण्डली को अथाह प्रेम और वात्सल्य बाँटते थे, वृन्दावन विश्वविद्यालय के कुलपति होने के बाद भी जो अपनी सरलता और सादगी के लिए विख्यात थे, जिन्होंने जन-जन में सदैव अगाध स्नेह, करूणा और ममता की सुगन्ध बिखेरी, जो पारिजात की कुसुम-मंजरी की भाँति यावज्जीवन ज्ञान की सुगन्ध वितरित करते रहे और स्वर्ग-प्रयाण के बाद आज भी जिनका दिव्य स्वरूप हमें धर्म के अग्नि-पथ पर अविचल भाव से चलने की प्रेरणा देता है। आर्य जगत् के प्रकाण्ड मनीषी, स्वतन्त्रता संग्राम-सेनानी, उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान, सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के अध्यक्ष तथा गुरुकुल वृन्दावन स्नातक शोध संस्थान के अध्यक्ष आदि पदों को सुशोभित करने वाले आचार्य डॉ. विशुद्धानन्द मिश्र का जन्म बदायूँ जनपद के ग्राम पुठी (रसूलपुर) में 24 नवम्बर, 1924 को हुआ था। आपके पूज्य पिता का नाम पं. अयोध्या प्रसाद मिश्र था। आपने अपनी विलक्षण मेधा से शुक्ल यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया था। आपने सिद्धान्त शास्त्री, आयुर्वेद भास्कर, एम.ए. (संस्कृत एवं हिन्दी), शास्त्री, आचार्य आदि उपाधियाँ उच्च श्रेणी में प्राप्त कीं। अनेक उच्च स्तरीय शिक्षण संस्थाओं ने आपको 'विद्या वारिधि', दर्शन वाचस्पति', 'विद्यावाचस्पति' आदि मानद उपाधियों से विभूषित किया।

डॉ. मिश्र की धर्मपत्नी निर्मला मिश्रा (जन्म 21 जून, 1931, स्वर्गवास: 18 जून, 1994) परम विदुषी एवं संस्कारित महिला थी। उन्हें पाँच भाषाओं पर पूर्ण अधिकार था। पार्वती देवी आर्य कन्या इण्टर कॉलिज बदायूँ की प्रधानाचार्या के रूप में उन्होंने सराहनीय सेवा की, जिसके लिए उन्हें राज्यपाल महोदय द्वारा पुरस्कृत किया गया था। यह माता के पवित्र संस्कारों का ही परिणाम है कि डॉ. मिश्र के परिवार के सभी सदस्य आज भी परस्पर संस्कृत में सम्भाषण करते हैं।

डॉ. मिश्र ने गुरूकुल विश्वविद्यलय वृन्दावन (मथुरा) के कुलपति पद को चार वर्ष तक सुशोभित किया। भारत सरकार द्वारा आपको राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली का तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आपको उ.प्र. संस्कृत अकादमी का माननीय सदस्य मनोनीत किया गया। श्रीकृष्ण इण्टर कॉलेज, बदायूँ में संस्कृत प्रवक्ता पद पर सेवारत रहते हुए आपने सुर भारती की अनन्य सेवा की। आपने अपनी धर्मपत्नी के साथ अनेक संस्कृत संस्थानों की स्थापना की तथा जनपद बदायूँ में स्वामी दयानन्द सरस्वती के पावन संस्कार आरोपित करके पुरातन सांस्कृतिक विरासत को कायम रखा। इस दम्पत्ति ने निरंतन 25 वर्षों तक आकाशवाणी से संस्कृत वार्ताओं एवे कविताओं का सुमधुर पाठ प्रस्तुत किया। यथा-कवि प्रत्येक भारतीय के लिए शाश्वत सुख-समृद्धि की कामना करता है-

"एकता अखण्डता-चेतना-वर्षकम्
जायतामृद्धि-सिद्धि-प्रवृद्धिर्भुवि।
भारतीया जनाः भ्रातृ-सौहार्दकम्।
धारयन्तां लभन्तां सुखं शाश्वतम्॥"

(आर्याश्च के ? हिन्दवः-पृष्ठ-87)

डॉ. विशुद्धानन्द मिश्र ने देववाणी में निम्नलिखित ग्रन्थों का प्रणयन किया- 1. वेदार्थ- कल्पद्रुमः (तीन खण्डों में) 2. सुखवाणी प्रशस्तिका, 3. चारूचरिताऽमृतम् 4. गोकरूणानिधि- काव्यम् 5. यास्कीय निघण्टुः, 6. वेदार्थभूमिका 7. सत्यार्थ प्रकाश- प्रशास्तिकम् 8. आर्याश्च के? हिन्दवः 9. वने निर्वासिता सीता तथा 10. प्रश्नोत्तर मंजरी। हिन्दी में आपके द्वारा रचित ग्रन्थ हैं- 1. वेदमन्त्रों पर निर्दिष्ट ऋषि मन्त्रद्रष्टा थे मन्त्रकर्त्ता नहीं, 2. हृदय मीमांस (जीवात्मा का शरीर में स्थान), 3. सुख-दुःख की दार्शनिक मीमांस, 4. क्या आयु निश्चित है?, 5. बिहारी- एक अध्ययन, 6. सुर-एक अध्ययन, 7. विद्यापति-एक अध्ययन तथा, 8. पृथ्वीराज विजय (संस्कृत-हिन्दी काव्य रूपान्तर)।

नव जागरण के पुरोधा, वेदवाक के मर्मज्ञ, महान् शिक्षावद्, महर्षि दयानन्द-दर्शन के सूत्रधार, वेद-वेदांग के प्रकाण्ड मनीषी डॉ. विशुद्धानन्द मिश्र विदत्परिषद् में संस्कृत एवं हिन्दी में आशु कवि के रूप में अनेक बार सम्मानित हुए। आपने अखिल भारतीय संस्कृत-सम्मेलनों, वैदिक संगोष्ठियों, अनेक दार्शनिक सभाओं एवम् कवि-सम्मेलनों में प्रमुख वक्ता अथवा अध्यक्ष पद को सुशोभित करते हुए अपने प्रखर पाण्डित्य का परिचय दिया। आपकी विलक्षण मेधा, अद्भुत वक्त्रता- शैली एवं प्रचुर काव्य-वैभव के लिए आपको सम्पूर्ण देश में दर्जनों पुरस्कारों एवं अलंकरणों से अभिषिक्त किया गया।

काल की गति निस्सीम है। भारत-भूमि पर वेद-वेदांग एवं भारतीय मनीषा के पावन स्वर गुंजायमान करने वाला यह प्रकाण्ड मनीषी 24 सितम्बर, 2012 को इस असार संसार को छोड़ गये। हम शिष्य-गण उस दिव्य-लोक-निवासी परम ज्योति को शत्-शत् प्रणाम करते हैं। कविवर्य माहेश्वर तिवारी के शब्दों में- **"किसी को न हो सका, उसके कद का अन्दाजा/ वो आसमान था और सर झुकाये बैठा था//"**

-बदायूँ मोबा. : 9837618715

चौधरी रघुवीर सिंह को नमन्

कसेरवा (शामली)। ऐषणाओं को त्याग करके अपना जीवन यज्ञ में लगाने वाले चौधरी रघुवीर सिंह, प्रधान- कसेरवा (शामली) का 28 दिसम्बर को 97वें वसन्त पूर्ण करने के पश्चात् निधन हो गया। प्रतिष्ठित किसान परिवार में जन्मे चौधरी साहब आजादी के पश्चात् लगातार 1.8 वर्ष तक ग्राम के प्रधान रहे। वे जब ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी (बरनावा) के सम्पर्क में आये तब से उन्होंने अपना जीवन यज्ञ हेतु समर्पित कर दिया। इनके प्रयास से ही इनके पौत्र आचार्य अरविन्द शास्त्री जो गुरुकुल बरनावा के विद्यार्थी रहे हैं, वर्तमान में यहीं आचार्य पद पर आसीन रहते हुए चतुर्वेद पारायण यज्ञों के माध्यम से वैदिक परम्परा की ध्वजा फेरा रहे हैं। चौधारी साहब के दो सुपुत्र चौ.वीरेन्द्र सिंह एवं राजेन्द्र सिंह भी याज्ञिक प्रवृत्ति के है। श्री चौधरी रघुवीर सिंह जी को कोटिशः नमन।

कर्मठ व ईमानदार व्यक्तित्व

शालिग्राम बलोदी का निधन

भानुप्रकाश बलोदी
कोटद्वार (गढ़वाल)।

सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व शालिग्राम बलोदी का 29 जनवरी को उनके निवास पर निधन हो गया। वे आजीवन आर्यत्व के प्रति समर्पित रहे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। श्री बलोदी के निधन पर अनेक संस्थाओं तथा महानुभावों ने हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित की है।

श्री बलोदी का जन्म सन् 1909 में ग्राम बलोद, पट्टी असवालस्यूं, जिला पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) में हुआ था। बलोदी के दादा कुलानन्द बलोदी किन्हीं कारणों से ग्राम बलोद को छोड़कर ग्राम निगोड़ी में शिफ्ट हो गये। शालिग्राम बलोदी चार भाई थे- हृदयराम बलोदी, शालिग्राम बलोदी, तुलसीराम बलोदी तथा सुन्दरमणी बलोदी। बलोदी की शिक्षा आधारिक विद्यालय कण्डारपानी, पट्टी असवालस्यूं (गढ़वाल) में हुई। इसके उपरान्त उच्च शिक्षा हेतु देहरादून चले गये। देहरादून से वे बंगाल पुलिस में भर्ती हो गये। पुलिस विभाग में वे एक उत्तम स्पोर्टस मैन रहे। भारत विभाजन के बाद आप पश्चिम बंगाल पुलिस में आ गये, तत्पश्चात् आप सीमा सुरक्षा बल में स्थानापन्न पर डी.एस.पी. (पुलिस उपाधीक्षक) के पद पर रहे। आप पश्चिम बंगाल के पुलिस ट्रेनिंग सैन्टर बैरकपुर में प्रथम सुरक्षा अधिकारी के पद पर कार्यरत् रहे। पुलिस में एक ईमानदार,, कर्मठ व वफादार अधिकारी की छवि आपकी रही है। 1968 में सेवानिवृत्त होने के बाद 1970 में आप कलकत्ता-1 में 'हावड़ा मोटर कम्पनी' में 'सुरक्षा अधिकारी' के रूप में कार्यरत् रहे। इसके अलावा भी शालिग्राम बलोदी ने पश्चिम बंगाल में अपनी दो सौ बीघा जमीन को चालीस अधिवासी (साऊन्थाल) परिवारों में (पांच-पांच बीघा करके) बांट दिया और अपने सेवानिवृत्ति के बाद बाल-बच्चों सहित अपने पैतृक स्थान गढ़वाल आ गये।

सन् 1989 में आप कोटद्वार (गढ़वाल) अपने घर वापस आ गये तथा अपने पत्नी व बच्चों के साथ रहने लगे। यहां आकर आपको जब यह पता चला कि कोटद्वार आर्य समाज की हालत बहुत खराब है और कुछ अनार्य किस्म के लोग समाज को अपना सेवी समाज समझकर बैठे हुये हैं और आर्यसमाज के सिद्धान्तों की धज्जियां उड़ायी जा रही हैं तो अपने कुछ अच्छे सदस्यों के साथ मिल बैठकर विचार-विमर्श कर कोटद्वार आर्य समाज को व्यवस्थित किया। तदुपरान्त उन्होंने गढ़वाल में जहां विभिन्न स्थानों में आर्य समाज मृत अवस्था में पड़ा हुआ था, उसे पुंर्नजाग्रत किया। इस कार्य में उन्हें गढ़वाल से ही काफी संख्या में नौजवान आर्य साथी मिले जिससे उनका यह अभियान सफल रहा और आज भी अच्छा चल रहा है।

आप सामाजिक कुरीतियों के घोर विरोधी थे। गढ़वाल में कई स्थानों में मेलों का आयोजन होता है और उन मेलों में भैंसों की बली दी जाती थी, आपने आर्य समाज को लेकर पशु बली का विरोध किया और ऐसे स्थानों पर जहां बली प्रथा जारी थी, जाकर आर्य समाज का कैम्प लगाया और लोगों को पशु बली न करने के लिए निवेदन किया। आज कई स्थानों पर पशु बली बन्द हो गया है। यहां आपके परिवार ने कुछ वर्षो तक बहुत कठिन व संघर्षपूर्ण जीवन बिताया, किन्तु आपके मार्ग दर्शन व आशीर्वाद से तथा आपके बड़े भाई स्व. हृदयराम बलोदी की देखरेख में आपका परिवार उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होता रहा। 29 जनवरी 2013 की सुबह पांच बजे उनका निधन हो गया। आज आपके छः के छः बच्चे समृद्ध और सम्पन्न हैं और पुलिस फोर्स में, बैंक में, कारपोरेट वर्ल्ड में तथा अधिवक्ता के रूप में तैनात हैं तथा देश व समाज की सेवा कर रहे हैं। ईश्वर आपके परिवार को इसी तरह सम्पन्न बनाये रखे।

डॉ. विनोद अग्रवाल को पत्नी शोक

हसनपुर (देवेन्द्र कुमार आर्य)। नगर के सुप्रसिद्ध चिकित्सक एवं समाज सेवी डॉ. विनोद अग्रवाल की धर्मपत्नी का आकस्मिक निधन हो गया। वे एक सरल हृदया, मृदुभाषी, धर्मनिष्ठ सद् गृहणी थीं। नगर की धार्मिक, सामजिक आदि संस्थाओं ने उनके निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। हरीश्चन्द्र आर्य के ब्रह्मत्व में आयोजित शांति यज्ञ में दिवंगत आत्मा की सद्गति की कामना की गयी, तथा शोक संतप्त परिजनों को प्रभु से शांति तथा धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गयी।

यज्ञ में उपस्थित प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, आर्यजन व अन्य गणमान्य नागरिक -केसरी।

यज्ञ करके लालाजी को याद किया

रामप्रसाद याज्ञिक
कोटा।

हिन्द केसरी लाला लाजपतराय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन के एक चमकते सितारे थे, वह सच्चे अर्थों में एक राष्ट्रवादी नेता थे जिनकी प्रेरणा से भगत सिंह जैसे शहीदों ने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने आपको आहूत कर दिया। उनके कार्यों की आज भी उतनी ही सामयिकता है जितनी उनके काल में थी। यह विचार प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने आज आर्य समाज द्वारा शोपिंग सेन्टर में आयोजित लाला लाजपत राय जयन्ती समारोह में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि दलितों की सेवा, अस्पृश्यता निवारण, अंधविश्वास तथा सामाजिक कुरीतियों को हटाने में भी लालाजी ने जीवन पर्यन्त अहम् भूमिका निभाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये जसपाल अरोड़ा "बिट्टू" वार्ड पार्षद ने कहा कि लालाजी एक निडर स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने साइमन कमीशन के विरोध में आन्दोलन का नेतृत्व करते हुये अपने प्राण तक न्यौछावार कर दिये।

इस अवसर पर आर्यसमाज जिला सभा कोटा द्वारा श्योराज वशिष्ठ के पौरोहित्य में या का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य यजमान जिला सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा थे। उपस्थित आर्य जनों व गणमान्य नागरिकों ने प्रार्थना मंत्रों के साथ प्रारम्भ हुये इस यज्ञ में मन्त्रोचार के साथ प्रारम्भ हुये इस यज्ञ में मन्त्रोचारण के साथ अपनी आहुतियां दी। इस अवसर पर कैलाश बाहेती, डॉ. के. एल. दिवाकर, रामप्रसाद याज्ञिक, जे. एस. दुबे, जसपाल अरोड़ा, रघुराज सिंह, वीर कुमार वधवा, महेश गुलाटी, लेखराज वधवा, मधु दुआ आदि उपस्थित थे। शांति पाठ व लाला जी अमर रहें के नारो के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

हमीरपुर जिला जेल के कैदियों को मिला मार्गदर्शन

विवेक आर्य
हमीरपुर (उत्तर प्रदेश)

23 से 27 नवम्बर तक आयोजित हमीरपुर आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर केवल दो दिनों के लिए होशंगाबाद मध्यप्रदेश से आये हुए अंतर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य आनंद पुरुषार्थी ने समय निकालकर जिला जेल के कैदी भाईयों एवं किशोर नवयुवकों को 25 नवम्बर को उपदेश दिया। ईश्वर की न्याय व्यवस्था से हर व्यक्ति को डरना चाहिए अन्यथा व्यक्ति स्वच्छंद सा हो जाता है। ऐसा कोई कार्य न करें जिसकों करने बाद पछताना पड़े। धैर्यपूर्वक अन्य के प्रतिकूल व्यवहार को सहन करना तथा अपने मन इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना तभी हो सकता है जबकि हम वैदिक धर्म के सत्संग स्वाध्याय से लगातार मार्ग दर्शन लेते रहेंगे। हमारी जरा सी गलती या आवेग से पूरा परिवार समाज में न केवल अप्रतिष्ठित होता है अपितु बच्चों के कैरियर पर भी इसका असर होता है अतः आप लोगों को इससे यथाशक्ति बचना चाहिए। आचार्य ने बताया कि जेल में उनका यह 43वां प्रवचन हो रहा है। आर्यसमाज की ओर से पुस्तकालय हेत जेल अधीक्षक दोहरे को महर्षि दयानंद द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया तथा दोहरे ने कहा कि आचार्य ने जो कुछ कहा है आप उसे संकल्प पूर्वक धारण करें, ऐसे ही न भूल जावें। आर्यसमाज हमीरपुर के प्रधान आर्य लक्ष्मी शंकर, सार्वदेशिक आर्यवीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश के महामंत्री विवेक आर्य, अनेक आर्यजन, जेल के उप जेल अधीक्षक व अधिकारी महानुभाव उपस्थित थे।

वीर हकीकत राय का बलिदान दिवस मनाया

अलावलपुर, पंजाब (जयप्रकाश शास्त्री)। आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द मॉडल स्कूल में वसन्त पंचमी का पर्व विशेष धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पंडित विजय कुमार शास्त्री व जयप्रकाश शास्त्री ने वीर हकीकत राय के बलिदान पर ओजस्वी विचार व्यक्त किये। बच्चों ने बहुत ही आकर्षक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित कार्यक्रम

- **13 से 15 मार्च, 2013** विद्वत्गोष्ठी- आर्यसमाज की ध्यान पद्धति (तृतीय) ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग अजमेर।
- **11 से 17 अप्रैल, 2013** ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग अजमेर। सम्पर्क सूत्र- 09414006961
- **17 से 26 मई, 2013** संस्कृत संभाषण शिविर सम्पर्क सूत्र- 09414709494
- **28 मई से 04 जून, 2013** आर्यवीर दल शिविर, सम्पर्क सूत्र- 099414436031
- **06 से 13 जून, 2013** आर्य वीरांगना शिविर, सम्पर्क सूत्र- 09414436031
- **16 से 23 जून, 2013** योग शिविर, सम्पर्क सूत्र- 0145-2460164
- **26 से 30 जून, 2013** विद्वत्गोष्ठी- आर्यसमाज की यज्ञ पद्धति (तृतीय) आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम् होशंगाबाद।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आगामी कार्यक्रम

- महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (ऋषि पर्व) : ७ मार्च १३
- ऋषि बोधोत्सव (ज्योति पर्व) : १० मार्च २०१३
- होलिकोत्सव : २४ मार्च २०१३
- आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी के जन्मदिवस पर भव्य अमृत महोत्सव : २६ मार्च २०१३

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली, राहुल त्यागी
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जेपी नगर उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स: 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com